॥ श्रीहरि: ॥

॥ श्री बृहद विश्वकर्मा पूजन एवं हवन पद्धति ॥

विषय अनुक्रमाणिका

1. विश्वकर्मा जिवन परिचय 02
2. पवित्र - आचमन 04
3. स्वस्ति वाचन 05
4. संकल्प 06
5. गणेश अम्बिका पूजन 08
6. कलश पूजन 09
7. षोडश मातृका पूजन 11
8. चतु:षष्ठि योगिनी पूजन 12
9. नवग्रह पूजन 13
10. सर्व देव ध्यानम् 14
11. विश्वकर्मा पूजन 15
12. हवन प्रकरण (पंचभू संस्कार) 24
13. आहुति मंत्र 26
14. विश्वकर्मा अष्टोत्तरशत नाम आहुति 29
15. विश्वकर्माष्टकम् आहुति 30
16. पुरुषुक्त आहुति 31
17. श्री सुक्त आहुति 32
18. बलिदान 34
19. पूर्णाहुति, वसोर्धारा 35
20. आरती विश्वकर्मा की 36
21. आरती जगदीश की 37
22. पुष्पांजलि, प्रदक्षिणा , दक्षिणा 38
23. आशिर्वाद, अभिषेक 40
24. विश्वकर्माष्टकम् 41
25. विश्वकर्मा चालीसा 42
26. विश्वकर्मा कथा 44

॥ विश्वकर्मा जिवन परिचय ॥

हम अपने प्राचीन ग्रंथो, उपनिषद, पुराण एवं ऋग्वेद आदि का अवलोकन करें तो पायेगें कि आदि काल से ही विश्वकर्मा शिल्पी अपने विशिष्ट ज्ञान एवं विज्ञान के कारण ही न मात्र मानवों अपितु देवगणों द्वारा भी पूजित और वन्दित है। भगवान विश्वकर्मा के आविष्कार एवं निर्माण कोर्यों के सन्दर्भ में इन्द्रपुरी, यमपुरी, वरुणपुरी, कुबेरपुरी, पाण्डवपुरी, सुदामापुरी, शिवमण्डलपुरी आदि का निर्माण इनके द्वारा किया गया है। पुष्पक विमान का निर्माण तथा सभी देवों के भवन और उनके दैनिक उपयोगी होनेवाले वस्तुएं भी इनके द्वारा ही बनाया गया है। कर्ण का कुण्डल, विष्णु का सुदर्शन चक्र, शंकर का त्रिशुल और यमराज का कालदण्ड इत्यादि वस्तुओं का निर्माण भगवान विश्वकर्मा ने ही किया है।

विश्वकर्मा जी दो बाहु, चार बाहु और दस बाहु वाले तथा एक मुख, चार मुख एवं पंच मुख वाले भगवान विश्वकर्मा के अनेक रूपों का वर्णन पुराणों में मिलता है। इसके अलावा भी इनके पांच स्वरूपों का वर्णन मिलता है-

१. विराट विश्वकर्मा — सृष्टि के रचयिता।
२. धर्मवंशी विश्वकर्मा — महान् शिल्प विज्ञान विधाता और प्रभात पुत्र।
३. अंगिरावंशी विश्वकर्मा — आदि विज्ञान विधाता वसु पुत्र।
४. सुधन्वा विश्वकर्म — महान् शिल्पाचार्य विज्ञान जन्मदाता अथवी ऋषि के पौत्र।
५. भृंगुवंशी विश्वकर्मा — उत्कृष्ट शिल्प विज्ञानाचार्य (शुक्राचार्य के पौत्र)।

ब्रह्मा से धर्म तथा धर्म से वास्तु देव हुए, जो शिल्प शास्त्र के आदि प्रवर्तक थे। वास्तु देव और उनकी पत्नि अंगिरसी से विश्वकर्मा उत्पन्न हुए थे। इसके अलावा भी स्कंद-पुराण के अनुसार प्रभास और उनकी पत्नि भुवना ब्रह्मवादिनी (बृहस्पति की बहन) से भगवान विश्वकर्मा का जन्म हुआ।

स्कन्द-पुराण के नागर खण्ड में भगवान विश्वकर्मा के वशंजों की चर्चा की गई है। ब्रम्ह स्वरुप विराट श्री विश्वकर्मा पंचमुख है। उनके पाँच मुख है जो पुर्व, पश्चिम, उत्तर, दक्षिण और ऋषियों को मत्रों व्दारा उत्पन्न किये है। उनके नाम है – मनु, मय, त्वष्टा, शिल्पी और दैवज्ञ।

1. **ऋषि मनु** मनु ऋषि ये भगनान विश्वकर्मा के सबसे बडे पुत्र थे। इनका गोत्र सानग था। इनका विवाह अंगिरा ऋषि की कन्या कंचना के साथ हुआ था इन्होने मानव सृष्टि का निर्माण किया है। इनके कुल में अग्निगर्भ, सर्वतोमुख, ब्रम्ह आदि ऋषि उत्पन्न हुये है। इनके वशंज लोहकार (लोहे) के रूप मे जानें जाते है।

2. **ऋषि मय** भगवान विश्वकर्मा के दुसरे पुत्र मय महर्षि थे। इनका गोत्र सनातन था। इनका विवाह परासर ऋषि की कन्या सौम्या देवी के साथ हुआ था। इन्होने इन्द्रजाल सृष्टि की रचना किया है। इनके कुल में विष्णुवर्धन, सूर्यतन्त्री, तंखपान, ओज, महोज इत्यादि महर्षि पैदा हुए है। इनके वंशंज काष्टकार (बढई) के रूप में जाने जाते है।

3. **ऋषि त्वष्ठा** भगवान विश्वकर्मा के तिसरे पुत्र महर्षि त्वष्ठा थे। इनका गोत्र अहंभन था। इनका विवाह कौषिक ऋषि की कन्या जयन्ती के साथ हुआ था। इनके कुल में लोक त्वष्ठा, तन्तु, वर्धन, हिरण्यगर्भ शुल्पी अमलायन ऋषि उत्पन्न हुये है। वे देवताओं में पूजित ऋषि थे। इनके वंशज ताम्रक के रूप में जाने जाते है।

4. **ऋषि शिल्पी** भगवान विश्वकर्मा के चौथे महर्षि शिल्पी पुत्र थे। इनका गोत्र प्रयत्न था। इनका विवाह भृगु ऋषि की करूणा के साथ हुआ था। इनके कुल में बृध्दि, ध्रुन, हरितावश्व, मेधवाह नल, वस्तोष्यति, शवमुन्यु आदि ऋषि हुये है। इनकी कलाओं का वर्णन मानव जाति क्या देवगण भी नहीं कर पाये है। इनके वशंज शिल्पकला (मुर्तिकार) के रुप में जाने जाते हैं।

5. **ऋषि दैवज्ञ** भगवान विश्वकर्मा के पाँचवे पुत्र महर्षि दैवज्ञ थे। इनका गोत्र सुर्पण था। इनका विवाह जैमिनी ऋषि की कन्या चन्द्रिका के साथ हुआ था। इनके कुल में सहस्रातु, हिरण्यम, सूर्यगोविन्द, लोकबान्धव, अर्कषली इत्यादी ऋषि हुये। इनके वशंज स्वर्णकार (रजत, स्वर्ण) के रूप में जाने जाते हैं।

विश्वकर्मा वैदिक देवता के रूप में मान्य हैं, किंतु उनका पौराणिक स्वरूप अलग प्रतीत होता है। आरंभिक काल से ही विश्वकर्मा के प्रति सम्मान का भाव रहा है। उनको गृहस्थ जैसी संस्था के लिए आवश्यक सुविधाओं का निर्माता और प्रवर्तक माना गया है। वह सृष्टि के प्रथम सूत्रधार कहे गए हैं -

- **देवौ सौ सूत्रधार: जगदखिल हित: ध्यायते सर्वसत्वै।**
- **कंबासूत्राम्बुपात्रं वहति करतले पुस्तकं ज्ञानसूत्रम्।**
  हंसारूढ़स्विनेत्रं शुभमुकुट शिर: सर्वतो वृद्धकाय: ॥
- विश्वकर्मा कंबासूत्र, जलपात्र, पुस्तक और ज्ञानसूत्र धारक हैं, हंस पर आरूढ़, सर्वदृष्टि-धारक, शुभ मुकुट और वृद्धकाय हैं।

॥ विश्वकर्मा पूजन प्रारम्भ ॥

- सर्वप्रथम यजमान को पूर्वा या उत्तराभि मुख बैठाकर सामने चौक बनाकर उसके ऊपर गौरी-गणेश, नवग्रह , कलश स्थापित करे।

- **पवित्रकरणम्** **ॐ अपवित्र: पवित्रो वा सर्वावस्थां गतोपि वा।**
  य: स्मरेत् पुण्डरीकाक्षं स बाह्याभ्यन्तर: शुचि: ॥

- **आचम्य** **ॐ केशवाय नमः। ॐ माधवाय नमः। ॐ नारायणाय नमः।** आचमन करें।
  ॐ हृषीकेशाय नमः। हाथ धो लें।

- **आसन शुद्धि** **ॐ पृथ्वी त्वया धृता लोका देवि त्वं विष्णुना धृता।**
  त्वं च धारय मां देवि पवित्रं कुरु चासनम् ॥
  - **ॐ स्योना पृथिवि नो भवानृक्षरा निवेशनी। यच्छा नः शर्म सप्रथाः ॥**

- **पवित्री (पैंती)** **ॐ पवित्रे स्थो वैष्णव्यौ सवितुर्व: प्रसवऽ उत्पुनाम्यच्छिद्रेण पवित्रेण सूर्यस्य रश्मिभि:। तस्य ते पवित्रपते पवित्र पूतस्य यत्काम: पूनेतच्छकेयम् ॥**

- **यज्ञोपवित** **ॐ यज्ञोपवीतं परमं पवित्रं प्रजा पतेर्यत सहजं पुरुस्तात।**
  आयुष्यं मग्रंय प्रतिमुन्च शुभ्रं यज्ञोपवितम बलमस्तु तेजः ॥

- **शिखाबन्धन** **ॐ चिद्रूपिणि महामाये दिव्यतेजः समन्विते।**
  तिष्ठ देवि शिखामध्ये तेजोवृद्धि कुरुव मे ॥

- **अंगन्यास** दाहिने हाथ की उँगलियों से अपने अंगों का स्पर्श करें।

1. ॐ वाङम आस्यऽस्तु। मुख
2. ॐ नसीर्मे प्रणोऽतु। नासिका छिद्र
3. ॐ अक्षणोर्मे चक्षुरस्तु। आँखें
4. ॐ कार्णयोर्मे श्रोतमस्तु। दोनों कान
5. ॐ वाह्वोर्मे बलमस्तु। भुजायें
6. ॐ ऊर्वोर्मे ओजोऽस्तु। जंघाये
7. ॐ अरिष्टानिङेस्ङानि तनूस्तन्वामे सहसन्तु। समस्त शरीर पर

- **तिलक** **चन्दनस्य महत्पुण्यम् पवित्रं पाप-नाशनम्।**
  आपदां हरते नित्यम् लक्ष्मी: तिष्ठति सर्वदा ॥
  - **ॐ स्वस्तिस्तु याऽ विनशाख्या धर्म कल्याण वृद्धिदा।**
    विनायक प्रिया नित्यं तां स्वस्तिं भो ब्रवंतु नः ॥

- **रक्षाबन्धनम्** **येन बद्धो बलि राजा, दानवेन्द्रो महाबल:।**
  तेन त्वाम् प्रतिबंद्धनामि रक्षे माचल माचल: ॥
  - **ॐ व्रतेन दीक्षामाप्नोति, दीक्षयाऽऽप्नोति दक्षिणाम्।**
    दक्षिणा श्रद्धामाप्नोति, श्रद्धया सत्यमाप्यते ॥

- **स्वस्ति-वाचन**

आ नो भद्राः क्रतवो यन्तु विश्वतोऽ दब्धासो अपरीतास उद्भिदः।
देवा नो यथा सदमिद् वृधे असन्नप्रायुवो रक्षितारो दिवे दिवे॥ ॥ १ ॥

- देवानां भद्रा सुमतिर्ऋ जूयतान्देवाना ७ राति रभिनो निवर्तताम्।
देवाना ७ सख्यमुपसेदिमा वयन्देवान आयुः प्रतिरन्तु जीवसे॥ ॥ २ ॥
- तान्पूर्वया निविदा हूमहेवयम् भगम् मित्रमदितिन् दक्षमस्रिधम्।
अर्यमणं वरुण ७ सोम मश्विना सरस्वती नः सुभगा मयस्करत् ॥ ३ ॥
- तन्नो वातो मयो भुवातु भेषजन् तन्माता पृथिवी तत्पिता द्यौः।
तद् ग्रावाणः सोमसुतो मयो भुवस्तदश्विना शृणुतन् धिष्ण्या युवम् ॥ ४ ॥
- तमीशानन् जगतस् तस्थुषस्पतिन् धियञ्जिन्वमवसे हूमहे वयम्।
पूषा नो यथा वेदसामसद् वृधे रक्षिता पायुरदब्धः स्वस्तये॥ ॥ ५ ॥
- स्वस्ति न इन्द्रो वृद्धश्रवाः स्वस्ति नः पूषा विश्ववेदाः।
स्वस्ति नस्ताक्ष्यों अरिष्टनेमिः स्वस्ति नो बृहस्पतिर्दधातु॥ ॥ ६ ॥
- पृषदश्वा मरुतः पृश्निमातरः शुभं य्यावानो विदथेषु जग्मयः।
अग्निजिह्वा मनवः सूरचक्षसो विश्वेनो देवा अवसा गमन्निह॥ ॥ ७ ॥
- भद्रं कर्णेभिः शृणुयाम देवा भद्रं पश्ये माक्षभिर्यजत्राः।
स्थिरै रङ्गैस्तुष्टुवा ७ सस्तनूभिर् व्यशेमहि देवहितं यदायुः॥ ॥ ८ ॥
- शतमिन्नु शरदो अन्ति देवा यत्रा नश्चक्रा जरसन् तनूनाम्।
पुत्रासो यत्र पितरो भवन्ति मानो मध्यारी रिषतायुर्गन्तोः॥ ॥ ९ ॥
- अदितिर्द्यौ रदितिरन्त रिक्षमदितिर् माता सपिता सपुत्रः।
विश्वे देवा अदितिः पञ्चजना अदितिर् जातमदितिर् जनित्वम् ॥१०॥
- द्यौः शान्तिरन्तरिक्ष ७ शान्तिः पृथिवी शान्तिरापः शान्तिरोषधयः
शान्तिः। वनस्पतयः शान्तिर्विश्वे देवाः शान्तिर्ब्रह्म शान्तिः
सर्व ७ शान्तिः शान्तिरेव शान्तिः सामा शान्तिरेधि॥ ॥११॥
- यतो यतः समीहसे ततो नो अभयं कुरु।
शन्नः कुरु प्रजाभ्योऽभयन्नः पशुभ्यः॥ ॥१२॥

1. श्रीमन् महागणाधीपतये नमः।
2. इष्ट देवताभ्यो नमः।
3. कुल देवताभ्यो नमः।
4. ग्राम देवताभ्यो नमः।
5. स्थान देवताभ्यो नमः।
6. वास्तु देवताभ्यो नमः।
7. वाणी हिरण्यगर्भाभ्याम नमः।
8. लक्ष्मी नारायणाभ्याम नमः।
9. उमा महेश्वराभ्याम नमः।
10. शची पुरंदाराभ्याम नमः।
11. मातृ पितृ चरण कमलेभ्यो नमः।
12. सर्वेभ्यो देवेभ्यो नमः।
13. सर्वेभ्यो ब्राह्मणेभ्यो नमः।
14. एतत कर्म प्रधान देवताभ्यो नमः।

- **सुमुखश्चै कदंतश्च कपिलो गजकर्णक: ।
  लम्बोदरश्च विकटो विघ्ननाशो विनायक: ॥** ॥ १ ॥
- **धुम्रकेतुर् गणाध्यक्षो भालचन्द्रो गजानन: ।
  द्वादशैतानि नामानि य: पठेच्छृणुयादपि ॥** ॥ २ ॥
- **विद्यारंभे विवाहे च प्रवेशे निर्गमे तथा ।
  संग्रामे संकटे चैव विघ्नस्तस्य न जायते ॥** ॥ ३ ॥
- **शुक्लाम्बर धरम देवं शशि वर्णं चतुर्भुजम ।
  प्रसन्नवदनं ध्यायेत सर्व विघ्नोपशान्तये ॥** ॥ ४ ॥
- **अभीप्सितार्थ सिद्ध्यर्थं पूजितो य: सुरासुरै: ।
  सर्वविघ्न हरस्तस्मै गणाधिपतये नमः ॥** ॥ ५ ॥
- **सर्वमंगल मांगल्ये शिवे सर्वार्थ साधिके ।
  शरण्ये त्र्यम्बके गौरी नारायणी नमोस्तु ते ॥** ॥ ६ ॥
- **सर्वदा सर्व कार्येषु नास्ति तेषाममंगलम ।
  येषां हृदयस्थो भगवान मंगलायतनो हरी: ॥** ॥ ७ ॥
- **तदेव लग्नं सुदिनं तदेव ताराबलं चंद्रबलं तदेव ।
  विद्याबलं दैवबलम तदेव लक्ष्मीपते तेन्घ्री युगं स्मरामि ॥** ॥ ८ ॥
- **वक्रतुंड महाकाय सूर्य कोटि समप्रभ ।
  निर्विघ्नं कुरुमे देव सर्व कार्येषु सर्वदा ॥** ॥ ९ ॥

- **संकल्प** ॐ विष्णु: र्विष्णु: र्विष्णु: ॐ तत्सत् अध श्री मद् भगवती महा-पुरुषस्य विष्णो-राज्ञया प्रवर्त्तमानस्य श्री ब्रह्मणीह्नि द्वितीये परार्द्धे विष्णु श्री-श्वेतवाराह-कल्पे वैवस्वत मन्वन्तरे अष्टाविंशत-तमे युगे कलियुगे कलिप्रथम-चरणे जम्बूद्वीपे भूलोके भारत वर्ष खण्हे आर्यावर्तैक देश बौद्धावतारे अमुक-क्षेत्रे, अमुक-देशे, अमुकनाम्नि-नगरे वा ग्रामे, अमुक नाम सम्बत्सरे श्री सूर्य अमुकायने, अमुक-ऋतौ, महा मांगल्यप्रदे मासोत्तमे मासे अमुक-मासे, अमुक-पक्षे, अमुक-तिथौ, अमुक-वासरे, अमुक-नक्षत्रे, अमुक-योगे, अमुक-करणे, अमुक राशि स्थिते चन्द्रे, अमुक राशि स्थिते सूर्य, अमुक राशि स्थिते देवगुरौ शेषेषु ग्रहेषु यथा राशि स्थान स्थितेषु सत्सु एवं ग्रह-गण-विषेण-विशिष्टायाँ शुभ पुण्य तिथौ अमुक-गोत्रोत्पन्नोऽहं, अमुक-शर्माहं वा (दूसरे के लिये अमुक गोत्र अमुक यजमानस्य) श्रुति-स्मृति-पुराणोक्त फल पूर्वक श्री विश्वकर्मा प्रीतकामो शिल्प नैपुण्यादि बृद्धि द्वारा व्यापारात् क्रय-विक्रय लक्ष्मी प्राप्त्यर्थं यथोक्त विधानेन श्रीघटोपरि श्री विश्वकर्मा पूजन करणार्थ निर्विघ्नता हेतवे गणपत्यादि देवानां सूर्यादि ग्रहणां तथा शालिग्राम देव-पूजनञ्च करिष्ये ।
- **पुनर्जलमादय** यत्र हवनम् तत्र कर्म्मांगभूत् पंचभूसंस्कारादि पूर्वक हवनं च करिष्ये ।

- **पृथ्वी ध्यानम्**

ॐ पृथ्वि त्वया धृता लोका देवि त्वं विष्णुना धृता ।
त्वं च धारय मां देवि पवित्रं कुरु चासनम् ॥

- **रक्षा विधानम्**

अप सर्पन्तु ते भूता ये भूता भूमि संस्थिताः ।
ये भूता विघ्नकर्तारस्ते नश्यन्तु शिवाज्ञया ॥

  - अपक्रामन्तु भूतानि पिशाचाः सर्वतो दिशम् ।
    सर्वेषाम विरोधेन पूजा कर्म समारभे ॥

- **दिप स्थापनम्**

शुभं करोतु कल्याणं आरोग्यं सुख सम्पदाम् ।
मम बुद्धि विकाशाय दीपज्योतिर्नमोस्तुते ॥

  - ॐ अग्निर्ज्योतिषा ज्योतिष्मान् रुक्मो वर्चसा वर्चस्वान् ।
    सहस्त्रदा ऽ असि सहस्त्राय त्वा ॥

- **सूर्य नमस्कार**

ॐ आकृष्णेन रजसा वर्तमानो निवेश्शयन्नमृतम्मर्त्यञ्च ।
हिरण्येन सविता रथेना देवो याति भुवनानि पश्यन् ॥

- **शंख पूजनम्**

ॐ पांचजन्याय विद्महे पावमानाय धीमहि ।
तन्नो शंखः प्रचोदयात् ॥

  - त्वं पुरा सागरोत्पन्नो विष्णुना विधृतः करें ।
    निर्मितः सर्वदेवैश्च पाञ्चजन्य नमोस्तुते ॥

- **घंटी पूजनम्**

आगमार्थं तु देवानां गमनार्थं तु रक्षसाम् ।
घण्टा नाद प्रकुर्वीत पश्चात् घण्टां प्रपूजयेत ॥

॥ गणेश अम्बिका पूजनम् ॥

- **गणेश ध्यानम्** **ॐ गणानां त्वा गणपति ७ हवामहे, प्रियाणान्त्वा प्रियपति ७ हवामहे, निधीनान्त्वा निधिपति ७ हवामहे, वसो: मम आहमजानि गर्भधम् मात्वमजासि गर्भधम् ॥**
  - ॐ भूर्भुव: स्व: सिद्धि बुद्धि सहिताय गणपतये नम: । गणपतिम् आ० स्था० पू० ।
- **गौरी ध्यानम्** **नमो देव्यै महादेव्यै शिवायै सततं नमः। नमः प्रकृत्यै भद्रायै नियताः प्रणताः स्म ताम् ॥**
  - ॐ भूर्भुव: स्व: गौर्यै नम: । गौरीम् आवाहयामि स्थापयामि पूजयामि ।

- नीचे दिये हुए मंत्रो के द्वारा गणेश-अम्बिका पंचोपचार या षोडशोपचार पूजन कर दें ।

१. आवाहनम् समर्पयामि ।
२. आसमन् समर्पयामि ।
३. पाद्यम् समर्पयामि ।
४. अर्घ्यम् समर्पयामि ।
५. आचमनीयम् समर्पयामि ।
६. स्नान समर्पयामि ।
७. वस्त्रम् समर्पयामि ।
८. उपवस्त्रम् समर्पयामि ।
९. गन्धम् समर्पयामि ।
१०. पुष्पाणि समर्पयामि ।
११. धूपम् आघ्रयामि
१२. दीपम् दर्शयामि ।
१३. नैवेद्यम् निवेदयामि ।
१४. ताम्बूलम् समर्पयामि ।
१५. दक्षिणां समर्पयामि ।
१६. ध्यानम् समर्पयामि ।
१७. परिक्रमा समर्पयामि ।
१८. मंत्र पुष्पांजलि ।

- **विशेषार्घ्य** एक ताम्रपात्र में जल, चन्दन, अक्षत, फल, फूल, दूर्वा और दक्षिणा रखलें ।
  - **रक्ष रक्ष गणाध्यक्ष रक्ष त्रैलोक्य रक्षक । भक्तानामभयं कर्ता त्राता भव भवार्णवात् ॥**
  - **द्वैमातुर कृपासिन्धो षाण्मातुराग्रज प्रभो । वरदस्त्वं वरं देहि वांछितं वांछितार्थद ॥**
  - **अनेन सफलार्घ्येण वरदोऽस्तु सदा मम ।**
  - गणेशाम्बिकाभ्यां नमः विशेषार्घ्यं समर्पयामि ।
- **प्रार्थना** **विघ्नेश्वराय वरदाय सुरप्रियाय, लम्बोदराय सकलाय जगद्धिताय । नागाननाय श्रुतियज्ञविभूषिताय, गौरीसुताय गणनाथ नमो नमस्ते ॥**
  - **त्वं वैष्णवी शक्तिरनन्तवीर्या, विश्वस्य बीजं परमासि माया । सम्मोहितं देवि समस्तमेतत्, त्वं वै प्रसन्ना भुवि मुक्तिहेतुः ॥**
  - गणेशाम्बिकाभ्यां नमः । प्रार्थनापूर्वकं नमस्कारान् समर्पयामि ।
- **समर्पण** अनया पूजया गणेशाम्बिके प्रीयेताम्, न मम ।

॥ कलश घट-स्थापन पूजनम् ॥

- **भूमि स्पर्श** — **ॐ भूरसि भूमिरस्यदितिरसि विश्वधाया विश्वस्य भुवनस्य धर्त्री ।**
  पृथिवीं यच्छ पृथिवीं दृ ᳪ ह पृथिवीं माहि ᳪ सीः ॥ भूमि का स्पर्श करें
- **धान्य प्रक्षेप** — **ॐ ओषधयः समवदन्त, सोमेन सह राज्ञा ।**
  यस्मै कृणोति ब्राह्मणस्त ᳪ राजन् पारयामसि ॥ भूमि पर सप्तधान्य रखें
- **कलश स्थापयेत्** — **ॐ आजिघ्र कलशं मह्या त्वा विशन्त्विन्दवः पुनरुर्जा निवर्त्तस्व सा नः।**
  सहस्रं धुक्क्ष्वोरु धारा पयस्वती पुनर्म्मा विशताद्रयिः॥ सप्तधान्य पर कलश रखें
- **कलशे जल पूरणम्** — **ॐ वरुणस्योत्तम्भन मसि वरुणस्य स्कम्भ सर्जनीस्त्थो वरुण्स्य ऽऋत**
  सदन्यसि वरुणस्य ऽऋत सदनमसि वरुणस्य ऽऋत सदन मासीद ॥
- **कलशे सोपारी प्रक्षेप** — **ॐ या फलिनीर्या अफला अपुष्पा याश्च पुष्पिणी ।**
  बृहस्पति प्रसूतास्ता नो मुञ्चन्त्व ᳪ हसः ॥ कलश में सोपारी रखें
- **कलशे हिरण्य प्रक्षेप** — **ॐ हिरण्यगर्भः समवर्त्तताग्रे भूतस्य जातः पतिरेक ऽआसीत ।**
  स दाधार पृथ्वीं द्यामुतेमां कस्मै देवाय हविषा विधेम ॥ कलश में दक्षिणा छोडें
- **कलश में सूत्र लपेटे** — **ॐ सुजातो ज्योतिषा सह शर्म वरूथमा सदत्स्वः ।**
  वासो अग्ने विश्वरूप ᳪ संव्ययस्व विभावसो ॥ कलश में मौली लपेट दें
- कलश पर नारीयल रखें — **ॐ श्रीश्चते लक्ष्मीश्च पत्न्यावहोरात्रे पार्श्वे नक्षत्राणि रूपमश्विनौ व्यात्तम् ।**
  इष्णन्निषाणामुम्मऽइषाण सर्वलोकम्मऽइषाण ॥ पूर्णपात्र पर नारियल रखें

- **कलश आवाहन** — **ॐ तत्त्वा यामि ब्रह्मणा वन्दमानस्तदा शास्ते यजमानो हविर्भिः ।**
  अहेडमानो वरुणेह बोध्युरुश ᳪ समा न आयुः प्रमोषीः॥
  - **कलशस्य मुखे विष्णुः कण्ठे रुद्र समाश्रिताः ।**
    मूले त्वस्य स्थितो ब्रह्मा मध्ये मात्र-गणाः स्मृताः ॥ ॥१॥
  - **कुक्षौ तु सागरा सर्वे सप्तद्वीपा वसुंधरा ।**
    ऋग्वेदोथ यजुर्वेदः सामवेदो ह्यथर्वणः ॥ ॥२॥
  - **अंगैश्च सहिता सर्वे कलशन्तु समाश्रिताः।**
    अत्र गायत्री सावित्री शान्तिः पुष्टिकरी तथा ॥ ॥३॥
  - **आयान्तु देव पूजार्थं दुरितक्षय-कारकाः ।**

- **गंगे च यमुने चैव गोदावरि सरस्वति ।**
  नर्मदे सिन्धु-कावेरि जलेऽस्मिन संनिधिं कुरु ॥ ॥४॥
- अस्मिन कलशे वरुणं सांड्ग सपरिवारं सायुधं सशक्तिकमावाहयामि।
  ॐ भूभुर्व: स्व: भो वरुण ! इहागच्छ इह तिष्ठ स्थापयामि, पूजयामि मम पूजां गृहाण।
  ॐ अपां पतये वरुणाय नम: ।

- **कलश चतुर्दिक्षु चतुर्वेदान्पूजयेत्** कलश के चारो तरफ कुंकुम एवं चावल लगा दें

- **पूर्व** **ऋग्वेदाय नम: ।**
- **दक्षिण** **यजुर्वेदाय नम: ।**
- **पश्चिम** **सामवेदाय नम: ।**
- **उत्तर** **अथर्वेदाय नम: ।**
- **कलश के ऊपर** **ॐ अपाम्पतये वरुणाय नम: ।**

- नीचे दिये हुए मंत्रो के द्वारा पंचोपचार या षोडशोपचार पूजन कर दें ।

- **प्रार्थना :** **देव-दानव संवादे मथ्यमाने महोदधौ ।**
  उत्पन्नोऽसि तदा कुम्भ विधृतो विष्णुना स्वयम् ॥ ॥ १॥
- **त्वत्तोये सर्व-तीर्थानि देवा: सर्वे त्वयि स्थिता: ।**
  त्वयि तिष्ठन्ति भूतानि त्वयि प्राणा: प्रतिष्ठता: ॥ ॥ २॥
- **शिव: स्वयं त्वमेवासि विष्णुस्त्वं च प्रजापति ।**
  आदित्या वसवो रुद्रा विश्वेदेवा: सपैतृका: ॥ ॥ ३॥
- **त्वयि तिष्ठन्ति सर्वेऽपि यत: काम-फल-प्रदा: ।**
- **त्वत्प्रसादादिमां पूजां कर्तुमीहे जलोद्भव ।**
  सांनिध्यं कुरु मे देव प्रसन्नो भव सर्वदा ॥ ॥ ४॥
- **नमो नमस्ते स्फटिक-प्रभाय सुश्वेतहाराय सुमंगलाय ।**
  सुपाश-हस्ताय झषासनाय जलाधिनाथाय नमो नमस्ते ॥ ॥ ५॥
- **ॐ वं वरुणाय नम: ॥**
- **ॐ अपांपतये वरुणाय नम: ॥**

- **अर्पण** अनेन कृतेन पूजनेन कलशे वरुणाद्यावाहित देवताः प्रीयन्ताम् न मम ।

॥ षोडश मातृका पूजनम् ॥

ॐ आत्मनःकुल-देवतायै नमः १७	ॐ लोकमातृभ्यो नमः १३	ॐ देवसायै नमः ९	ॐ मेधायै नमः ५
ॐ तुष्ट्यै नमः १६	ॐ मातृभ्यो नमः १२	ॐ जयायै नमः ८	ॐ शच्यै नमः १२
ॐ पुष्ट्यै नमः १५	ॐ स्वाहायै नमः ११	ॐ विजयायै नमः ७	ॐ पद्मायै नमः ३
ॐ धृत्यै नमः १४	ॐ स्वधायै नमः ११	ॐ सावित्र्यै नमः ७	ॐ गौर्य्यै नमः २ ॐ गणेशाय नमः १

ॐ अम्बे अम्बिके अम्बालिके नमानयति कश्चन।
ससत्स्यश्वकः सुभद्रिकां काम्पीलवासिनीं॥
गौरी पद्मा शची मेधा, सावित्री विजया जया।
देवसेना स्वधा स्वाहा, मातरो लोकमातरः॥
धृतिः पुष्टिस्तथा तुष्टिः, आत्मनः कुलदेवता।
गणेशेनाधिका ह्येता, वृद्धौ पूज्याश्च षोडश॥

1. **ॐ गणपतये नमः** गणपतिम् आ.स्था.पू.।
2. **ॐ गौर्यै नमः** गौरीम् आ.स्था.पू.।
3. **ॐ पद्मायै नमः** पद्माम् आ.स्था.पू.।
4. **ॐ शच्यै नमः** शचीम् आ.स्था.पू.।
5. **ॐ मेधायै नमः** मेधाम् आ.स्था.पू.।
6. **ॐ सावित्र्यै नमः** सावित्रीम् आ.स्था.पू.।
7. **ॐ विजयायै नमः** विजयाम् आ.स्था.पू.।
8. **ॐ जयायै नमः** जयाम् आ.स्था.पू.।
9. **ॐ देवसेनायै नमः** देवसेनाम् आ.स्था.पू.।
10. **ॐ स्वधायै नमः** स्वधाम् आ.स्था.पू.।
11. **ॐ स्वाहायै नमः** स्वाहाम् आ.स्था.पू.।
12. **ॐ मातृभ्यो नमः** मातृः आ.स्था.पू.।
13. **ॐ लोकमातृभ्यो नमः** लोलमातृः आ.स्था.पू.।
14. **ॐ धृत्यै नमः** धृतिम् आ.स्था.पू.।
15. **ॐ पुष्टयै नमः** पुष्टिम् आ.स्था.पू.।
16. **ॐ तुष्टयै नमः** तुष्टिम् आ.स्था.पू.।
17. **ॐ आत्मनः कुल देवतायै नमः**
    आत्मननः कुल देवताम् आ.स्था.पू.।

- नीचे दिये हुए मंत्रो के द्वारा पंचोपचार या षोडशोपचार पूजन कर दें।

- **प्रार्थना** **आयुरारोग्यमैश्वर्यं ददध्वं मातरो मम।**
  निर्विघ्नं सर्वकार्येषु कुरुध्वं सगणाधिपाः॥

- **समर्पण** अनया पूजया गणेश सहित गौर्यादिषोडशमातरः प्रीयन्ताम् न मम।

॥ चतु:षष्ठि योगिनी मण्डलम् पुजनम् ॥

महाकाल्यै नम:
ॐ अम्बे अम्बिके अम्बालिके नमा नयति कश्चन ।
ससस्त्यश्वक: सुभद्रिकां काम्पील वासिनीम् ॥
महालक्ष्म्यै नम:
ॐ श्रीश्चते लक्ष्मीश्च पत्न्यावहोरात्रे पार्श्वे नक्षत्राणि रूपमश्विनौ व्यात्तम । ईष्णन्निषाण मुम्मीषाण सर्वलोकम्मीषाण ॥
महा सरस्वत्यै नम:
ॐ पावका न: सरस्वती वाजेभिर्वाजिनीवती ।
यज्ञं वष्टु धियावसु:॥

- **ध्यानम्** ॐ आवाहयाम्यहं देवीं योगिनीं परमेश्वरीम् ।
योगाभ्यासेन सतुष्टा परं ध्यान समन्विता ॥

१. ॐ गजाननायै नम:
२. सिंह मुख्यै नम:
३. गृध्रास्यै नम:
४. काक-तुण्डिकायै नम:
५. उष्ट्रगीवायै नम:
६. हय-ग्रीवायै नम:
७. वाराह्यै नम:
८. शिरभाननायै नम:
९. उलूकिकायै नम:
१०. शिवारावायै नम:
११. मायूर्यै नम:
१२. विकटाननायै नम:
१३. अष्ट-वक्त्रायै नम:
१४. कोटराक्ष्यै नम:
१५. कुब्जायै नम:
१६. विकटलोचनायै नम:
१७. शुष्कोदर्यै नम:
१८. ललज्जिह्वायै नम:
१९. श्व-दंष्ट्रायै नम:
२०. वानराननायै नम:
२१. रुक्षाक्ष्यै नम:
२२. केकराक्ष्यै नम:
२३. बृहत्-तुण्डायै नम:
२४. सुरा-प्रियायै नम:
२५. कपाल-हस्तायै नम:
२६. रक्ताक्ष्यै नम:
२७. शुक्यै नम:
२८. श्येन्यै नम:
२९. कपोतिकायै नम:
३०. पाश-हस्तायै नम:
३१. दण्ड-हस्तायै नम:
३२. प्रचण्डायै नम:
३३. चण्ड-विक्रमायै नम:
३४. शिशुघ्न्यै नम:
३५. पाश-हन्त्र्यै नम:
३६. काल्यै नम:
३७. रुधिर-पायिन्यै नम:
३८. वसा-धयायै नम:
३९. गर्भ-भक्षायै नम:
४०. शव-हस्तायै नम:
४१. आन्त्र-मालिन्यै नम:
४२. स्थूल-केश्यै नम:
४३. बृहत्-कुक्ष्यै नम:
४४. सर्पास्यायै नम:
४५. प्रेत-वाहनायै नम:
४६. दन्द-शूक-करायै नम:
४७. क्रौञ्च्यै नम:
४८. मृग-शीर्षायै नम:
४९. वृषाननायै नम:
५०. व्यात्तास्यायै नम:
५१. धूमनि: श्वासायै नम:
५२. व्योमैकचरणोर्ध्वदृशे नम:
५३. तापिन्यै नम:
५४. शोषणीदृष्टयै नम:
५५. कोटर्यै नम:
५६. स्थूल-नासिकायै नम:
५७. विद्युत्प्रभायै नम:
५८. बलाकास्यायै नम:
५९. मार्जार्यै नम:
६०. कट-पूतनायै नम:
६१. अट्टाट्टहासायै नम:
६२. कामाक्ष्यै नम:
६३. मृगाक्ष्यै नम:
६४. मृगलोचनायै नम:

- ॐ भूभुर्व: स्व: चतु:षष्ठि योगिनी मण्डल देवताभ्यो नम: । आवाह्यामि स्थापयामि पूजयामि ।

॥ नवग्रह मंण्डल पूजनम् ॥
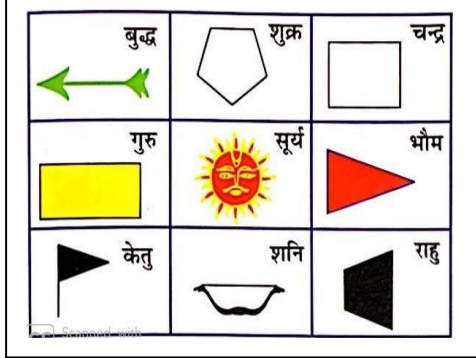
ब्रह्मा मुरारी स्त्रिपुरान्तकारी
भानुः शशि भूमि-सुतो बुधश्च।
गुरुश्च शुक्रः शनि राहु केतवः
सर्वे ग्रहाः शान्ति करा भवन्तु॥

- ग्रहों के स्थापन-पूजन के लिये किसी वेदी अथवा पाटे पर नौ कोष्ठकों का एक चौकोर मण्डल बनाये। बीच वाले कौष्ठक में सूर्य, अग्निकोण के कोष्ठक में चन्द्र, दक्षिण में मंगल, ईशान कोण में बुध, उत्तर में बृहस्पति, पूर्व में शुक्र, पश्चिम में शनि, नैर्ऋत्य कोण में राहु और वायव्य कोण में केतु की स्थापना करें।

- नवग्रहों का आवाहन एवं स्थापन करें।

1. **सूर्याय नमः** सूर्यम् आ.स्था.।
2. **सोमाय नमः** सोमम् आ.स्था.।
3. **भौमाय नमः** भौमम् आ.स्था.।
4. **बुधाय नमः** बुधम् आ.स्था.।
5. **बृहस्पतये नमः** बृहस्पतिम् आ.स्था.।
6. **शुक्राय नमः** शुक्रम् आ.स्था.।
7. **शनैश्चराय नमः** शनैश्चरम् आ.स्था.।
8. **राहवे नमः** राहुम् आ.स्था.।
9. **केतवे नमः** केतुम् आ.स्था.।

- नीचे दिये हुए मंत्रो के द्वारा पंचोपचार या षोडशोपचार पूजन कर दें।

- **प्रार्थना** **सूर्यः शौर्यमथेन्दुरुच्चपदवीं सन्मङ्गलं मङ्गलः**
  सदबुद्धिं च बुधो गुरुश्च गुरुतां शुक्रः सुखं शं शनिः।
  राहुर्बाहुबलं करोतु सततं केतुः कुलस्योन्नतिं
  नित्यं प्रीतिकरा भवन्तु मम ते सर्वेऽनुकूला ग्रहाः॥

- **समर्पण** अनया पूजया सूर्यादि नवग्रहाः प्रीयन्ताम् न मम।

- **ओंकारादि ध्यानम्**

  ओंकारं बिंदु संयुक्तं नित्यं ध्यायन्ति योगिनः ।
  कामदं मोक्षदं चैव ओंकाराय नमो नमः ॥
  ओंकारादि पंच प्रणवेभ्यो नमः ।

- **शिव ध्यानम्**

  ॐ त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम् ।
  उर्वारुकमिव बन्धनान् मृत्योर्मुक्षीय मामृतात् ॥
  ॐ त्र्यम्बकायै नमः ।

- **लक्ष्मी ध्यानम्**

  ॐ श्रीश्चते लक्ष्मीश्च पत्न्या वहोरात्रे पार्श्वे नक्षत्राणि रूपमश्विनौ व्यात्तम् ।
  ईष्णन्निषाणा मुम्मऽइषाण सर्वलोकम्ऽमइषाण ॥
  ॐ श्रीय नमः ।

- **वासुक्या दृष्ट ध्यानम्**

  ॐ नमोस्तु षष्टेभ्यो येकेन पृथ्वी मनु ।
  येन्तरिक्षे ये दिवितेभ्यो सर्पेभ्यो नमः ॥
  वासुक्या दृष्टकुल नागेभ्यो नमः ।

॥ श्री विश्वकर्मा पूजन ॥

- **प्राण-प्रतिष्ठा**
- विनियोग — अस्य श्री प्राण प्रतिष्ठा मन्त्रस्य ब्रह्मा-विष्णु-महेश्वरा ऋषयः ऋग्यजुः सामाथर्वणाः छन्दाँसि चैतत्य रुपापरा प्राण शक्तिर्देवता ॐ वीजंह्री शक्तिः क्रीं कीलकम् श्री विश्वकर्मा देवस्य प्राण प्रतिष्ठापने विनियोगः।

- करन्यास पूर्वक प्राण प्रतिष्ठा करें।

१. ॐ आं हीं क्रीं अं कं ख ग ड़ं क्रों हीं आं पृथव्यप्ते जो याज्वाकाशात्मने आ अगुष्ठाभ्यां नमः।
२. ॐ आं हों क्रों एं चं जं झं ञं क्रीं हा आँ शब्द स्पर्श रूप-रस-गन्धात्मने ई तर्जनीभ्यां नमः।
३. ॐ आं हीं क्रीं उं टं ठं डं ढं णं ऊं क्रा हीं आं क्षोत्रत्वक चक्षुजिह्वघ्नात्ममने ओं मध्यमाभ्यां नमः।
४. ऊं आं हीं क्रीं एं तं थं धं न ऐं क्रीं हीं आं वाक् पाणि-पादयो यपस्थात्मने ॐ ऐ अनामिकभ्यां नमः।
५. ॐ आं हीं क्रों ॐ पं फं बं भं मं औ कीं हीं आं वचना दान गति विसार्गानन्दात्मने कनिष्ठिकाभ्यां नमः।
६. ॐ औं हीं क्रौं अं यं रं लं वं शं षं हं क्षं अं हीं आं मनो हंकार चित्त। विज्ञानात्मने ॐ करतल कर पृष्ठाभ्यां।

- हृदयादि न्यास पूर्वक प्राण प्रतिष्ठा करें।

१. ॐ आँ हीं क्रों अं कं खं गं घं डं क्रो ही आं पृथिव्यप्तेजोवाय्वा काशात्मने आं हृदयाय नमः।
२. ॐ आँ हीं क्रीं अं इं चं छं जं झं ञं क्रीं हीं आं शब्द-स्पर्श-रूप रस गन्धात्मने ईं शिरसे स्वाहा।
३. ॐ आं हीं क्रीं उं टं ठं डं ढं णं ऊं क्रीं हीं आं श्रोत्रत्वकक्षु जिह्वा-घ्राणामने ॐ शिखायै वषट्।
४. ॐ हीं क्रीं ऐं तं थं दं धं नं ऐं क्रीं हीं आं पाणि-पादयो यूषस्थात्मने ऐं कवचाय हुम।
५. ॐ आं हीं क्रीं ओं पं फं बं भं मं ओं क्रीं आं वचनादान गति विसागनिन्दात्मने ॐ नेत्रयाय वोषट्।
६. ॐ आँ ही क्रों अं यं रं लं वं शं षं सं हं क्षं अः क्रों हीं आँ मनोहकार चित्त विज्ञानात्मने अस्त्राय फट्।

- ॐ आं हीं क्रौं अं यं रं लं वं शं षं सं हं सः सोऽहं अस्या विश्वकर्मा प्रतिमायाः प्राणा इह प्राणाः।
- ॐ आं हीं क्रौं अं यं रं लं वं शं षं सं हं सः सोऽहं अस्या विश्वकर्मा प्रतिमायाः जीव इह स्थितः।
- ॐ आं हीं क्रौं अं यं रं लं वं शं षं सं हं सः सोऽहं अस्या विश्वकर्मा प्रतिमायाः सर्वेन्द्रियाणि वाङ्मनस्त्वक् चक्षुः श्रोत्रा-जिह्वा-घ्राण-पाणिपाद-पायूपस्थानि इहैवागत्य सुखं चिरं तिष्ठन्तु स्वाहा।

- प्राणशक्ति ध्यान — **रक्ताम्भोधिस्थतोल्लसदरुण सरोजाधिरूढ़ कराब्जैः।**
पाशंकोदण्डमिक्षुद् भव-गुण-मणिमष्यं कुशं पुश्च वाणान्॥
  - **विभ्राणा स्त्रक् कपालं त्रिनयन लसिता पीनवक्षो रूहाध्या।**
देवो वालार्कवर्णा भवतु सुखकरी प्राणशक्तिः परान्नः॥

- श्लोक **ॐ मनो जूतिर्जुषता माज्यस्य बृहस्पतिर्यज्ञमिमं तनोत्वरिष्टं यज्ञ ७ समिमं दधातु। विश्वे देवास सऽइह मादयन्तामोम्प्रतिष्ठ॥**
  - **अस्यै प्राणाः प्रतिष्ठंतु अस्यै प्राणाः क्षरन्तु च।**
    अस्यै देवत्वम् आचार्यै मामहेति च कश्चन॥
  - अस्मिन् कलसे श्री विश्वकर्मन् सुप्रतिष्ठत् वरदो भव।

- विश्वकर्मा ध्यानम् **भाद्रपद-शुभ-शुक्ल-पक्षे प्रतिपदा-प्रतिशोभितम्,**
  मातृ-भुवने सुत-प्रभासे सिद्धि-जनकं-मोहितम्।
  विश्वकर्मा-विधि-विराटं पञ्चमुख-प्रभुपूजितम्,
  सर्व-कर्म-सुवन्दनं कुरु देव-शिल्पी-ध्यायितम्॥
  - **चिन्तयेद् विश्वकर्माणं शिवे ! वटतरोरधः।**
    दिव्य सिंहासनासीनं मुनि वृन्द निषेवितम्॥ ॥ १ ॥
  - **उपास्यमान ममरैः स्तूयमानं महर्षिभिः।**
    पंचवक्र दशभुजं ब्रह्मचारिब्रते स्थितम्॥ ॥ २ ॥
  - **लक्ष्मी सरस्वतीभ्यांच संक्षालित् पदद्वयम्।**
    वक्षस्थलेच विभ्राण ब्रह्म विद्या मुमातनुम्॥ ॥ ३ ॥
  - **हारकेयूर कट कुण्डलाद्यैः सुशोभितम्।**
    भस्मांगरागं देवेशं वरद सुस्मिताननम्॥ ॥ ४ ॥
  - **कुद्दाल करणी वास्य ममियत्रं कमण्डलम्।**
    विभ्राणं दक्षिणैर्हस्तैरवरोह क्रमात्प्रभुम्॥ ॥ ५ ॥
  - **मेरू टक स्वनं भूषा वन्हिचदधतं करै।**
    अवरोह क्रमेणैव वामैर्बाम विलोचने॥ ॥ ६ ॥
  - **एवं घ्यायेन्महादेवि विश्वकर्माण माव्ययम्।** ॥ ७ ॥

वट वृक्ष के नीचे दिव्य सिंहासन पर बैठे हुए श्री विश्वकर्मा जी का चिन्तन करें। जिनकी मुनिवृन्द सेवा करते हैं। १। समस्त देवता जिनकी उपासना में लगे हुए हैं। जिनकी समस्त महर्षि स्तुति करते हैं, जिनके पाँच मुख और दस भुजाये हैं। जो ब्रह्मचारी व्रत में स्थित हैं। २। लक्ष्मी और सरस्वती जिनके चरण को धोती हैं, जो अपने हृदय में ब्रह्म विद्या को धारण किये हुए है। ३। जो हार, भुजबन्द, कुंडलों से सुशोभित है। जो भस्म को धारण करने वाले देवों के देव, सबके वरदायी और सदा मुस्कराते रहते हैं। ४। जो दायें हाथों में कुदाल, करणी, ममियंत्र, वसूला और कमण्डल तया बायें हाथों में निहाय, छेनी, संडसी, धमनी और अग्निपात्र को क्रमशः धारण करते हैं। हे महा देवी ! ऐसे प्रभु श्री विश्वकर्मा जी का ध्यान करें जो सदा अविनाशी तथा एक रस है। ५-७।

- विश्वकर्मणे नमः। ध्यानार्थे पुष्पाणि समर्पयामि। ध्यान हेतु पुष्प चढायें।

- आवाहन

**ॐ सहस्रशीर्षा पुरुषः सहस्राक्षः सहस्रपात् ।
स भूमि ७ सर्व तस्पृत्वाऽ त्यतिष्ठ द्दशाङ्गुलम् ॥**

- **देवशिल्पिन् महाभाग देवनाम् कार्य-साधक ।
विश्वकर्मन् नमस्तूभ्यं सर्वाभीष्ट प्रदायकम् ॥**
- **आवाहयामि देवेशं विश्वकर्माणमिश्वरम्,
मूर्ताऽमूर्तकरं देवं सर्वकर्तारमद् भुतम् ॥
त्रैलोक्यसूत्रकर्त्तारं द्विभुजं विश्वदर्शितम्,
आगच्छ विश्वकर्मस्त्वं यज्ञेऽस्मिन् सन्निधो भव ॥**
- **त्रैलोक्य - सूत्रकर्तार द्विभुजं विश्व दर्शितम् ।
आगच्छ विश्वकर्मस्त्वं यज्ञऽस्मिन् संन्निधोभव ॥** ॥ १ ॥
- **प्रसीद विश्वकर्मस्त्व शिल्प विद्या विशारदः ।
दण्डषाण ! नमस्तुभ्यं तेजोमूर्तिधर प्रभो ॥** ॥ २ ॥
- **ज्योतिर्मयं शान्तिमय प्रदाप्तम विश्वात्मकं विश्वजितं निरीहं ।
आद्यन्त शून्यं सकल कलामयम् श्री विश्वकर्माणमहं नमामि** ॥ ३ ॥
- **विश्वकर्माख्य नामानं देवतागण पूजितम् ।
आगच्छ भगवन्ब्रह्म क्षेत्रेऽस्मिन् संनिधोमव ॥** ॥ ४ ॥
- ॐ विश्वकर्म्मनि इहागच्छ इहतिष्ठ अन्नाधिष्ठानं कुरु-कुरु मम पूजां गृहाण ।
- ॐ विश्वकर्मणे नमः । आवाहनार्थे पुष्पम् समर्पयामि ।

- **आसनम्**

**ॐ पुरुषऽएवेदं ७ सर्व य्यद्भूतं यच्च भाव्यम् ।
उतामृ तत्वस्ये शानो यदन्नेना तिरोहति ॥**

- **रम्यं सुशोभनं दिव्यं सर्व-सौख्यकरं शुभम् ।
आसनं च मया दत्तं गृहाण परमेश्वर ॥**
- **सुवर्ण रचितं देय दिव्यास्तरण शोभितं ।
आसनम् हिमयादत्तं गृहाण परमेश्वरम् ॥** आसन हेतु अक्षत चढायें ।
- ॐ भूर्भुस्वः विश्वकर्मणे नमः । आसनार्थे पुष्पाणि समर्पयामि ।

- **पाद्यम्**

**ॐ एतावानस्य महिमातो ज्यायाँश्च पूरुषः ।
पादोऽस्य विश्वा भूतानि त्रिपादस्या मृतं दिवि ॥**

- **इदं पाद्य मया दत्त सर्व-सुगंध संयुक्तम् ।
गृहीत्वा विश्वकर्मेश प्रसन्नो भव वास्तुज ॥** पाद्य हेतु जल अर्पण करें ।
- ॐ भूर्भुस्वः विश्वकर्मणे नमः । पादयोः पाद्यं समर्पयामि ।

- अर्घ्यम्
  ॐ त्रिपादूर्ध्व उदैत्पुरुष: पादोऽस्येहा भवत्पुन:।
  ततो विष्ष्वङ् व्यक्रा मत्सा शना नशनेऽ अभि ॥
  - **दिव्यौषधिरसोपेतं गन्ध-पुष्पाऽक्षतैः सह।**
    गृहाणाऽर्ध्यं मया दत्तं विश्वकर्मन् कृपां कुरु ॥ अर्घ्य हेतु जल-गन्धाक्षतपुष्प छोडे
  - ॐ भूर्भुस्वः विश्वकर्मणे नमः। हस्तयोरर्घ्यं समर्पयामि।

- आचमनम्
  ॐ ततो विराड जायत विराजोऽ अधि पूरुषः।
  स जातोऽ अत्य रिच्यत पश्चाद् भूमिमथो पुरः ॥
  - **सुगंध-वासितं दिव्यं निर्मलं सलिलं विभो।**
    गृहाणाऽचमनं सौम्य विश्वकर्मन् कृपां कुरु ॥ आचमन हेतु जल अर्पण करें।
  - ॐ भूर्भुस्वः विश्वकर्मणे नमः। मुखे आचमनीयं समर्पयामि।

- स्नान
  ॐ तस्माद्यज्ञात् सर्व हुतः सम्भृतं पृषदाज्यम्।
  पशूंस्ताँश्चक्रे वायव्या नारण्या ग्राम्याश्च ये ॥ स्नान हेतु जल अर्पण करें।
  - ॐ भूर्भुस्वः विश्वकर्मणे नमः। स्नानीयं जलं समर्पयामि।

- दुग्ध स्नानम्
  ॐ पयः पृथिव्यां पय ओषधीषु पयो दिव्यन् तरिक्षे पयोधाः।
  पयस्वतीः प्रदिशः सन्तु मह्यम ॥
  - **कामधेनु समुत्पन्नं सर्वेषां जीवनं परम्।**
    पावन यज्ञ हेतुश्च स्नानार्थं समर्पितम् ॥ दूध से स्नान करायें।
  - ॐ भूर्भुस्वः विश्वकर्मणे नमः। पयः स्नानम् समर्पयामि।

- दधि स्नानम्
  ॐ दधि क्राव्णो अकारिषं जिष्णोरश्वस्य वाजिनः।
  सुरभि नो मुखा करत् प्रण आयु ७ षि तारिषत् ॥
  - **पयस्तु समुद्-भूतं मधुसम्लं शशिप्रभं।**
    दध्यानीतं मयादेव स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम् ॥ दधि से स्नान करायें।
  - ॐ भूर्भुस्वः विश्वकर्मणे नमः। दधि स्नानम् समर्पयामि।

- घृत स्नानम्
  ॐ घृतं मिमिक्षे घृतमस्य योनिर्घृते श्रितो घृतम वस्य धाम।
  अनुष्वधमा वह मदयस्व स्वाहाकृतं वृषभ वक्षि हव्यम् ॥
  - **नवनीतं समुत्पन्न सर्व सन्तोष कारकम्।**
    घृतं तुभ्यं प्रदास्यामि स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम् ॥ घी से स्नान करायें।
  - ॐ भूर्भुस्वः विश्वकर्मणे नमः। घृत स्नानम् समर्पयामि।

- मधु स्नानम् — **ॐ मधु वाता ऋतायते मधु क्षरन्ति सिन्धव: । माद्धवीर्न: सन्त्वोषधी: ।
  मधु नक्त मुतो षसो मधुमत् पार्थिव ७ रज: । मधु द्यौरस्तुन: पिता ।
  मधुमान्नो व्वनस्पतिर् मधुमाँ२ अस्तु सूर्य: । माध्वीर्गावो भवन्तु न: ॥**
  - **तरु पुष्प ससुद् भुतं मुस्वादु मधुर मधु ।
    ममलं पुष्टिकरं दिव्य स्नानार्थ प्रतिगृह्यताम् ॥** शहद से स्नान करायें ।
  - ॐ भूर्भुस्वः विश्वकर्मणे नमः । मधु स्नानम् समर्पयामि ।

- शर्करा स्नानम् — **ॐ अपा ७ रसमुद् वयस ७ सूर्ये सन्त: ७ समाहितम ।
  अपा ७ रसस्य यो रसस्तम् वो गृह्णाम्युत्तम मुपयाम गृहीतो
  सिन्द्राय त्वा जुष्टं गृह्णाम्येष ते योनि रिन्द्राय त्वा जुष्टतमम् ॥**
  - **इक्षुसार समुद् भूता शर्करा पुष्टि कारिका ।
    मलापहारिका दिव्या स्नानार्थ प्रतिगृह्यताम् ॥** सक्कर से स्नान करायें ।
  - ॐ भूर्भुस्वः विश्वकर्मणे नमः । शर्करा स्नानम् समर्पयामि ।

- पंचामृत स्नानम् — **ॐ पञ्च नद्य: सरस्वती मपि यान्ति सस्रोतस: ।
  सरस्वती तु पञ्चधा सोऽदेशे भवत्सरित ॥**
  - **पञ्चामृतं मयानीतं पयो दधि घृतं मधु ।
    शर्करा च समायुक्तं स्नानार्थं विश्वकर्मन् प्रतिगृह्यताम् ॥** पंचामृत से स्नान करायें ।
  - ॐ भूर्भुस्वः विश्वकर्मणे नमः । पंचामृत स्नानम् समर्पयामि ।

- गन्धोदक स्नानम् — **ॐ अ ७ शुनाते अ ७ शु: पृच्यतां परुषा परु: ।
  गन्धस्ते सोममवतु मदाय रसो अच्युत: ॥**
  - **मलयाचल सम्भूतं चन्दनागरू सम्भवम् ।
    चन्दनं देव-देवेश स्नानार्थ प्रतिगृह्यताम ॥** इत्र से स्न्नान करायें ।
  - ॐ भूर्भुस्वः विश्वकर्मणे नमः । गन्धोदक स्नानम् समर्पयामि ।

- शुद्धोदक स्नानम् — **ॐ शुद्धवाल: सर्वशुद्धवालो मणिवालस्यऽ अश्विना:।
  श्वेत: श्वेताक्षो रुणस्ते रुद्राय पशुपतये कर्णायामा
  अवलिप्ता रौद्रा नभोरूपा: पार्जन्या: ॥**
  - **ॐ यक्षकर्दम-काद्यैश्च स्नानं कुरू विश्वकर्मन् ।
    अन्त्यं मलहरं शुद्धं सर्व-सौगन्ध्य-कारकम् ॥** शुद्ध जल से स्नान करायें ।
  - ॐ भूर्भुस्वः विश्वकर्मणे नमः । शुद्धोदक स्नानम् समर्पयामि ।

- अभिषेक स्नानम् — यथासम्भव देवताओं का पुरुषसुक्त, श्रीसुक्त या अन्य मंत्रो द्वारा अभिषेक करना चाहिये ।

- वस्त्रम्
  ॐ तस्माद्यज्ञात् सर्वहुतऽ ऋचः सामानि जज्ञिरे ।
  छन्दा ७ सि जज्ञिरे तस्माद्य जुस्तस्माद जायत ॥
  - **ॐ सर्वभूषाधिके सौम्ये लोक लज्जा निवारणे ।**
    मयो पपादि ते तुभ्यं वाससी प्रतिगृह्यताम् ॥
  - ॐ भूर्भुस्वः विश्वकर्मणे नमः । वस्त्रम् समर्पयामि । वस्त्र चढायें ।

- उपवस्त्रम्
  ॐ सुजातो ज्योतिषा सह शर्म्म वरूथमासदत्स्वः ।
  वासोग्ने विश्वरूप ७ संव्ययस्व विभावसो ॥
  - **उपवस्त्रम् प्रयच्छामि देवाय परमात्मने ।**
    भक्त्या समर्पितं देव प्रसीद परमेश्वर ॥ उपवस्त्र चढायें ।
  - ॐ भूर्भुस्वः विश्वकर्मणे नमः । उपवस्त्रम् समर्पयामि ।

- यज्ञोपवीतम्
  ॐ यज्ञोपवीतं परमं पवित्रं, प्रजापतेर्यत्सहजं पुरस्तात् ।
  आयुष्यमग्र्यं प्रतिमुञ्च शुभ्रं, यज्ञोपवीतं बलमस्तु तेजः ॥
  - **नवभिस्तन्तुभिर्युक्तं त्रिगुणं देवता मयम् ।**
    उपवीतं चोत्तरीयं गृहाण शिल्पिनायक ॥ यज्ञोपवीत पहनायें ।
  - ॐ भूर्भुस्वः विश्वकर्मणे नमः । यज्ञोपवीतम् समर्पयामि ।

- चन्दनम् (गन्ध)
  तँ यज्ञम् बर्हिषि प्रौक्षन् पुरुषन् जातमग्रतः ।
  तेन देवाऽ अयजन्त साध्याऽ ऋषयश्च ये ॥
  - **नाना सुगन्ध-द्रव्यञ्च चन्दनं रजनी-युतम् ।**
    श्रीगन्धं च मयादत्तं गृहाणं परमेश्वर ॥ चन्दन चढायें ।
  - ॐ भूर्भुस्वः विश्वकर्मणे नमः । चन्दम् समर्पयामि ।

- अक्षतम्
  ॐ अक्क्षन्न मीमदन्त ह्यवप्प्रियाऽ अधुषत ।
  अस्तोषत स्वभानवो विप्रा नविष्ठया मती योजान् विन्द्रतेहरी ॥
  - **अक्षताश्च सुरश्रेष्ठ कुंकुमाक्ताः सुशोभिता : ।**
    मया निवेदिता भक्त्या गृहाण परमेश्वर ॥ चावल चढायें ।
  - ॐ भूर्भुस्वः विश्वकर्मणे नमः । अक्षत समर्पयामि ।

- पुष्प / पुष्पमालाम्
  ॐ ओषधीः प्रतिमोदद्धवं पुष्पवतीः प्रसूवरीः ।
  अश्वाऽ इव सजित्त्वरीर्वीरुधः पारयिष्णवः ॥
  - **माल्यादीनि सुगन्धीनि मालत्यादीनि वै प्रभो ।**
    मयाहृतानि पुष्पाणि गृहाण परमेश्वर ॥ पुष्प चढायें ।
  - ॐ भूर्भुस्वः विश्वकर्मणे नमः । पुष्पं पुष्पमालां समर्पयामि ।

- दूर्वाम्

ॐ काण्डात काण्डात प्रोहन्ती परुष: परुषस्परि।
एवा नो दूर्वे प्रतनु सहस्त्रेण शतेन च॥

- **दूर्वांकुरान् सुहरितानमृतान् मङ्गल प्रदान्।**
  आनीतांस्तव पूजार्थं गृहाण विश्वकर्मन्॥ दूर्वा चढायें।
- ॐ भूर्भुस्व: विश्वकर्मणे नम:। दूर्वां कुरान् समर्पयामि।

- तुलसीपत्रम्

तुलसीं हेमरूपां च रत्नरूपां च मञ्जरीम्।
भवमोक्षप्रदां तुभ्यमर्पयामि हरिप्रियाम्॥ तुलसी अर्पित करें।

- ॐ भूर्भुस्व: विश्वकर्मणे नम:। तुलसीदलं तुलसीमञ्जरीं च समर्पयामि।

- आभुषणम्

ॐ युवं तमिन्द्रा पर्वता पुरोयुधा यो न: एतन्यादप तन्तमिद्धतं वज्रेण तन्तमिद्धतम्। दूरे चत्ताय छन्त्सद् गहनं यदिनक्षत्॥

- **वज्रमाणिक्य वैदूर्यमुक्ताविद्रुम मण्डितम्।**
  पुष्प-राग-समायुक्तं भूषणं प्रतिगृह्यताम्॥ आभुषण चढायें।
- ॐ भूर्भुस्व: विश्वकर्मणे नम:। अलङ्करणार्थे आभूषणानि समर्पयामि।

- सुगन्धित तैल (इत्र)

ॐ त्रयम्बकं यजामहे सुगन्धिम् पुष्टि वर्द्धनम।
उर्वारुक मिव बन्धनान मृत्योर्मुक्षीय मामृतात॥

- **ॐ अ ॶ शुनाते अ ॶ शु: पृच्यतां परुषा परु:।**
  गन्धस्ते सोम मवतु मदाय रसोऽ अच्च्युत:॥ इत्र चढायें।
- ॐ भूर्भुस्व: विश्वकर्मणे नम:। सुगन्धि तैलादि द्रव्यं समर्पयामि।

- सौभाग्य द्रव्यम्

ॐ अहिरिव भोगै: पर्येति बाहुन् ज्यावा हेतिम् परिबाधमान:।
हस्तघ्नो विश्वा वयुनानि विद्वान् पुमान पुमा ॶ सं परिपातु विश्वत:॥

- **अबीरं च गुलालं च चोवा चन्दन मेव च।**
  अबीरेणर्चितो देव अत: शान्ति प्रयच्छमे॥ अबीर-गुलाल चढायें।
- ॐ भूर्भुस्व: विश्वकर्मणे नम:। नाना-परिमल द्रव्याणि समर्पयामि।

- धुपम्

ॐ धूरसि धूर्व धूर्वन्तं धूर्व तं योऽस्मान् धूर्वति तं धूर्व यं व्वयं धूर्वाम:।
देवानामसि वह्नितमं ॶ सस्नितमं पप्रितमं जुष्टतमं देवहूतमम्॥

- **ॐ वनस्पति रसोद्भूतो गन्धाढ्यो गन्ध: उत्तम:।**
  आघ्रेय: सर्व देवानां धूपोऽयं प्रतिगृह्यताम्॥ धुप दिखायें।
- ॐ भूर्भुस्व: विश्वकर्मणे नम:। धूपमाघ्रापयामि।

- दीपम् — **ॐ अग्निर्ज्योतिः ज्योतिरग्निः स्वाहा**
  सूर्यो ज्योतिर्ज्योतिः सूर्यः स्वाहा ।
  अग्निर्व्वर्चो ज्योतिर्व्वर्च्चः स्वाहा
  सूर्य्योव्वर्च्चो ज्योतिर्व्वर्च्चः स्वाहा ।
  ज्योतिः सूर्य्यः सूर्य्योज्योतिः स्वाहा ॥
  - **साज्यं च वर्ति संयुक्तम् वह्निना योजितम् मया ।**
    दीपं गृहाण देवेश त्रैलोक्यति मिरापहम् ॥ दीप दिखायें ।
  - ॐ भूर्भुस्वः विश्वकर्मणे नमः । दीपं दर्शयामि ।

- नैवद्यम् — **ॐ नाभ्या आसीदन्तरिक्ष ७ शीर्ष्णो द्यौः समवर्तत ।**
  पद्भ्यां भूमिर्दिशः श्रोत्रात्तथा लोकाँ२ अकल्पयन् ॥
  - **चोष्यैश्च भक्ष्य-निवहैश्च करम्बितं ते ।**
    भोज्यं ददामि विश्वकर्मन् दिव्यमन्नम् ॥ नैवद्य अर्पण करें ।
  - ॐ भूर्भुस्वः विश्वकर्मणे नमः । नैवेद्यं निवेदयामि, मध्ये पानीयं जलं समर्पयामि,
  - प्राणाय स्वाहा, अपानाय स्वाहा, व्यानाय स्वाहा, उदानाय स्वाहा, समानाय स्वाहा ॥

- ऋतुफलम् — **ॐ याः फलिनीर्या अफला अपुष्पा याश्च पुष्पिणीः।**
  बृहस्पतिप्रसूतास्ता नो मुञ्चन्त्व ७ ह सः ॥
  - **इदं फलं मया देव स्थापितम् पुरतस्तव ।**
    तेन मे सफला वाप्तिर्भवेत जन्मनि जन्मनि ॥ फल चढायें ।
  - ॐ भूर्भुस्वः विश्वकर्मणे नमः । अखण्ड ऋतुफलम् समर्पयामि ।

- करोद्वर्तन — **चन्दनं मलयोद्भूतं कस्तूर्यादिसमन्वितम् ।**
  करोद्वर्तनकं देव गृहाण परमेश्वर ॥ मलय-चन्दन अर्पित करे ।
  - ॐ भूर्भुस्वः विश्वकर्मणे नमः । करोद्वर्तनकं चन्दनं समर्पयामि ।

- ताम्बूलम् — **ॐ यत्पुरुषेण हविषा देवा यज्ञमतन्वत ।**
  वसन्तोऽस्यासीदाज्यं ग्रीष्म इध्मः शरद्धविः ॥
  - **पूगीफलं महद्दिव्यं नागवल्ली दलैर्युतम् ।**
    एलादिचूर्ण संयुक्तं ताम्बूलं प्रतिगृह्यताम् ॥
  - **अष्टांग देव ताम्बूलं गृहाण मुखवासनम् ।**
    असकृद्शिल्पराज त्वं मया दत्तं विशेषतः ॥ पान-सुपारी चढायें ।
  - ॐ भूर्भुस्वः विश्वकर्मणे नमः । एलालवंगपूगीफलयुतं ताम्बूलं समर्पयामि ।

- दक्षिणा

ॐ हिरण्यगर्भः समवर्तताग्रे भूतस्य जातः पतिरेक आसीत् ।
स दाधार पृथिवीं द्यामुतेमां कस्मै देवाय हविषा विधेम् ॥

- **हिरण्यगर्भ गर्भस्थं हेमबीजं विभावसोः।**
  अनन्त पुण्य फलद मत्तः शान्तिं प्रयच्छ मे ॥ दक्षिणा चढायें।
- ॐ भूर्भुस्वः विश्वकर्मणे नमः । द्रव्य-दक्षिणां समर्पयामि ।

- आरती

आरार्तिका कर्पुरकादिभूतामपारदीपां प्रकरोमि पूर्णाम् ।
रचनाकर तां गृहाण ह्यज्ञानध्वान्तौघहरां निजानाम् ॥

- **ॐ आ रात्रि पार्थिव ७ रजः पितुरप्रायि धामभिः ।**
  दिवः सदा ७ सि बृहती वि-तिष्ठस आ-त्वेषं वर्तते तमः ॥
- ॐ भूर्भुस्वः विश्वकर्मणे नमः । कपुर आरार्तीक्यं समर्पयामि ।

- प्रार्थना

ॐ देवशिल्पि महाभाग देवानां कार्य साधकः ।
विश्वकम नमस्तुभ्यं सर्वाभीष्ट प्रदायन ॥

- **नमो देवाय भद्राय विश्वकर्मा गृह निर्माण शालिने ।**
  वत्कलं गोराण्ड रुप पीत वस्त्रम् कापिने ॥
- ॐ भूर्भुस्वः विश्वकर्मणे नमः । प्रार्थनां समर्पयामि ।

- ब्राह्मण पूजनम्

नमो ब्राह्मण देवाय गो ब्राह्मण हिताय च ।
जगद्धिताय कृष्णाय गोविन्दाय नमो नमः ॥

- **दैवाधीना जगत्सर्वं मन्त्राधीनाश्च देवता ।**
  ते मन्त्राः ब्रह्मणाधीनाः तस्माद् ब्राम्हण देवता ॥
- **ब्रह्मयोनि चतुर्मूर्ति वेदव्यास पितामहः ।**
  आयान्तु ब्रह्मलोकानां तस्मै श्री ब्रह्मणे नमः ॥

- पूजन के बाद विविध प्रकार के औजारों और यंत्रों आदि की पूजा करें ।
  - **ॐ त्वस्टा त्वम् निर्मितः पूर्वलोका नाम हित काम्यया ।**
    पूजितोऽसि सत्राणि त्वं सिद्धिदौ भवनो ध्रुवम् ॥

- अब श्रीविश्वकर्मा चालीसा व विश्वकर्माष्टकम् का पाठ करें ।
- उसके बाद श्री विश्वकर्मा कथा का श्रवण करें ।

॥ हवन - प्रकरण ॥

- कथा सुनने के उपरान्त हवन करने की विधि है।
- सर्वप्रथम हवन सामाग्री (जव, तिल आदि) एकत्र कर शांकल्य बनावे।
- अब यजमान हवन पात्र में अग्नि डालकर पहले अग्निदेव का स्थापन करे।

- **संकल्प** — **ॐ विष्णुर्विष्णुर्विष्णु: पूर्वोच्चारित ग्रह-गण-गुण-विशेषण-विशिष्टायां शुभ-पुण्य तिथौ अमुकगोत्र: अमुकोऽहं (सपत्नीक:) कृतस्य श्री विश्वकर्मा पूजनं, व्रत कथा कर्मण: साङ्गता सिद्ध्यर्थं यथोपस्थित सामग्रीभि: होमं करिष्ये।**

- **पञ्च-भूसंस्कार**

1. परिसमुह्य — **ॐ दर्भै: परिसमूह्य, परिसमूह्य, परिसमूह्य।**
   तीन कुशों (दर्भ) से वेदी अथवा ताम्रकुण्ड का दक्षिण से उत्तर की ओर परिमार्जन करे तथा उन कुशों को ईशान दिशा में फेंक दे।

2. उपलेपनम् — **ॐ गोमयेन उपलिप्य, उपलिप्य, उपलिप्य।**
   गोबर और जल से लीप दे।

3. उल्लेखनम् — **ॐ दर्भ या स्रुवमूलेन उल्लिख्य, उल्लिख्य, उल्लिख्य।**
   स्रुवा या कुशमूल से पश्चिम से पूर्व की ओर प्रादेशमात्र (दस अंगुल लम्बी) तीन रेखाएँ दक्षिण से प्रारम्भ कर उत्तर की ओर खींचे।

4. उद्धरणम् — **ॐ अनामिकाङ्गुष्ठेन उद्धृत्य, उद्धृत्य, उद्धृत्य।**
   रेखांकित किये गये स्थल के ऊपर की मिट्टी अनामिका और अँगुठे के सहकार से पूर्व या ईशान दिशा की ओर फेंक दे।

5. अभ्युक्षण — **ॐ उदकने अभ्युक्ष्य, अभ्युक्ष्य, अभ्युक्ष्य।**
   पुन: जल से कुण्ड या स्थण्डिल को सींच दे।

- **अग्नि स्थापनम्** — सौभाग्यवती स्त्री (बहन आदि) से कांसे, तांबे या मिट्टी के पात्र में अग्नि मंगाए।
  - हवनकर्ता स्वयं अग्नि पात्र को वेदी या कुण्ड के उपर तीन बार घुमाकर अग्निकोण में रखे अग्नि में से क्रव्यादांश निकाल कर नैऋत्य कोण में डाले दे तदन्तर अग्निपात्र को स्वाभिमुख करते हुए **"हुं फट्"** कहते हुए अग्नि को वेदी में स्थापित करें।

- **अग्नि मन्त्र** — **ॐ अग्निं दूतं पुरो दधे हव्यवाहमुप ब्रुवे।**
  देवाँ २ आ सादयादिह॥
  - थाली में द्रव्य - अक्षत छोड कर अग्नि जिससे लिये हैं उन्हें देदें।

- परिस्तरणम् कुण्ड या स्थण्डिल के पूर्व उत्तराग्र तीन कुश या दूर्वा रखे।
  - दक्षिणभाग में पूर्वाग्र तीन कुश या दूर्वा रखे।
  - पश्चिमभाग में उत्तराग्र तीन कुश या दूर्वा रखे।
  - उत्तरभाग में पूर्वाग्र तीन कुश या दूर्वा रखे।

- आवाहन (अग्नि) **ॐ रक्त माल्याम्बर धरं रक्त-पद्मासन-स्थितम्।**
  स्वाहा स्वधा वषट्कारै रंकितं मेष वाहनम्॥
  - **सर्वत: पाणिपादश्च सर्वतोऽक्षिशिरोमुखः।**
    विश्वरूपो महानग्निः प्रणीत: सर्वकर्मसु॥
  - **ॐ अग्निमावाहयामि'** इस मन्त्र से अग्रिका आवाहन करे।

- ध्यानम् (अग्नि) **ॐ चत्वारि श्रृङ्गा त्रयो अस्य पादा द्वे शीर्षे सप्त हस्तासो अस्य।**
  त्रिधा बद्धो वृषभो रोरवीति महादेवो मर्त्या२ आविवेश।
  - **अग्नि प्रज्वलितं वन्दे जातवेदं हुताशनम्।**
    सुवर्णवर्णममलं समिद्धं सर्वतोमुखम्॥
  - **ॐ बलवर्धननामाग्नये नमः** ' अग्रिका पूजन करे।
  - विश्वकर्मा कथा- श्रवण' एक पौष्टिक कर्म है, जो कल्याण की अभिवृद्धि तथा अभ्युदय प्राप्त कराता है। इस पौष्टिक कर्म में प्रयुक्त अग्रिका नाम 'बलवर्धन' है- **पौष्टिके बलवर्धनः**।

॥ आहुति मंत्र ॥

- घी आहुति — वेदी के आगे अपनी ओर एक प्रोक्षणी पात्र में थोडा सा जल रखें।
  - घी की आहुति देने के बाद स्रुवा का शेष घी इसी कटोरी के जल में छोड दें।

  १. **ॐ प्रजापतये स्वाहा — इदं प्रजापतये न मम।**
  २. **ॐ इन्द्राय स्वाहा — इदं इन्द्राय न मम।**
  ३. **ॐ अग्नये स्वाहा — इदं अग्नये न मम।**
  ४. **ॐ सोमाय स्वाहा — इदं सोमाय न मम।**
  ५. **ॐ यथा बाण प्रहाराणां कवचं वारकं भवेत्।**
  तद्वद्देवो पघातानां शान्तिर्भवति वारिका॥ यजमान के सिर पर जल छिड़कें।

  - शान्तिरस्तु पुष्टिरस्तु यत्पापं रोगं अकल्याणम् तद्दूरे प्रतिहतमस्तु।

- द्रव्यत्याग — **अस्मिन् होम-कर्मणि या: या: यक्षमाण-देवता: ताभ्य: ताभ्य: इदं हवनीय द्रव्यं मया परित्यक्तं तत्सद्यथा-दैवतमस्तु न मम।** जल छोड़ दे।

- वराहुति — गणेश-गौरी के निमित्त दी गयी आहुति 'वराहुति' कहलाती है।

- गणेश आहुति — ॐ **गणानां त्वा गणपति ७ हवामहे, प्रियाणान्त्वा प्रियपति ७ हवामहे, निधीनान्त्वा निधिपति ७ हवामहे, वसो: मम आहमजानि गर्भधम् मात्वमजासि गर्भधम्॥** स्वाहा

- गौरी आहुति — **ॐ अम्बे अम्बिके अम्बालिके नमानयति कश्चन।**
  ससत्स्यश्वक: सुभद्रिकां काम्पीलवासिनीम्॥ स्वाहा

- ब्रह्मा होम — **ॐ ब्रह्म यज्ञानं प्रथमं पुरस्ताद् व्रिसीमत: सुरुचोव्वेन आव:।**
  स बुध्न्या उपमाऽ अस्य विष्ठा: सतश्च योनिम सतश्चव्विव:॥ स्वाहा

- विष्णु होम — **ॐ इदं विष्णुर्विचक्रमे त्रेधा निदधे पदम्।**
  समूढ़मष्य पा ७ सुरे स्वाहा॥ स्वाहा

- शिव होम — **ॐ नमस्ते रुद्रमन्न्यव उतोत इषवे नम: बाहुभ्यामुतते नम:॥** स्वाहा

- दुर्गा होम — **ॐ अम्बेऽ अम्बिकेऽ अम्बालिके न मा नयति कश्चन।**
  ससस्त्यश्वक: सुभद्रिकां काम्पील वासिनीम्॥ स्वाहा

- लक्ष्मी होम — **ॐश्रीश्चते लक्ष्मीश्च पत्न्यावहोरात्रे पार्श्वे नक्षत्राणि रूपमश्विनौ व्यात्तम। ईष्णन्निषाण मुं मइषाण सर्वलोकम् मइषाण॥** स्वाहा

- सरस्वती होम — **ॐ पावका नः सरस्वती वाजेभिर्वाजिनीवती। यज्ञं वष्टु धियावसुः॥** स्वाहा
- वरुण होम — **ॐ वरुणस्योत्तम् भनमसि वरुणस्य स्कम्भ सर्जनीस्त्थो। वरुणस्य ऋत सदन्यसि वरुणस्य ऋत सदनमसि वरुणस्य ऋत सदन मासीद॥**स्वाहा
- वास्तु होम — **ॐ वास्तोष्पते प्रतिजानीहि अस्मान् स्वावेशो अनमीवो भवा नः। यत्त्वेमहे प्रतितन्नो जुषस्व शन्नो भव द्विपदे शं चतुष्पदे॥** स्वाहा
- विश्वकर्माणं होम — **ॐ विश्वकर्मन हविषा वर्द्धनेन, त्रातारमिन्द्रम कृणोरवद्धयम। तस्मै विशः समनमन्त, पूर्वीरयमुग्रो विहव्यो यथासत्॥**
  - **त्रैलोक्य सूत्र कर्त्तारम् द्विभुजम् विश्वदर्शितम्। आगच्छ विश्वकर्मस्त्वं स्तम्भेस्मिन् सन्निधो भव॥** स्वाहा

- नवग्रह-होम — नवग्रहों की आहुति शाकल्य से अथवा घी से देनी चाहिये या दोनों से।
  - शाकल्य मृगीमुद्रा से ग्रहण करना चाहिये।
  - मृगीमुद्रा अनामिका, मध्यमा तथा अँगुठे को मिलाकर बनायी गयी मुद्रा।

१. **सूर्यम्** — **ॐ आकृष्णेन रजसा वर्त्तमानो निवेशयन्नमृतं मर्त्यञ्च। हिरण्ययेन सविता रथेना देवो याति भुवनानि पश्यन्॥**
- **जपा कुसुम संकाशं काश्यपेयं महाद्युतिम्। तमोऽरिं सव्र पापघ्नं प्रणतोऽस्मि दिवाकरम्॥** सुर्याय नमः स्वाहा।

२. **चन्द्रम्** — **ॐ इमं देवाऽअसपत्न ७ सुवध्वं महते क्षत्राय महते ज्यैष्ठयाय महते जानराज्या येन्द्रस्येन्द्रियाय। इमममुष्य पुत्रममुष्यै पुत्रमस्यै विशऽएष वोमी राजा सोमोस्माकं ब्राह्मणाना ७ राजा॥**
- **दधि शंख तुषाराभं क्षीरोदार्णव संभवम्। नमामि शशिनं सोम शम्भोर्मुकुटभूषणम्॥** सोमाय नमः स्वाहा।

३. **भौमम्** — **ॐ अग्निर्मूर्धा दिवः ककुत्पतिः पृथिव्याऽयम्। अपा ७ रेता ७ सि जिन्वति॥**
- **धरणी गर्भसंभूतं विद्युत्कान्ति समप्रभम्। कुमारं शक्ति हस्तं च मंगलं प्रणमाम्यहम्॥** भौमाय नमः स्वाहा।

४. **बुधम्** — **ॐ उद्बुध्य स्वाग्ने प्रति जागृहि त्वमिष्टा पूर्ते स ७ सृजेथा मयं च। अस्मिन्त्सधस्थे अध्युत्तरस्मिन् विश्वेदेवा यजमानश्च सीदत॥**
- **प्रियंगु कलिका श्यामं रुपेण प्रतिमं बुधम्। सौम्यं सौम्य गुणोपेतं तं बुधं प्रणमाम्यहम्॥** बुधाय नमः स्वाहा।

५. **बृहस्पतिम्**

ॐ बृहस्पतेऽ अति यदर्यो अर्हाद्युमद् विभाति क्रतुमज्जनेषु।
यद्दीदयच्छवस ऋतप्रजा त तदस्मासु द्रविणं धेहि चित्रम्॥

- देवानां च ऋषीणां च गुरुं कांचन सन्निभम्।
बुद्धिभूतं त्रिलोकेशं तन्नमामि बृहस्पतिम्॥ बृहस्पतये नमः स्वाहा॥

६. **शुक्रम्**

ॐ अन्नात् परिस्त्रुतो रसं ब्रह्मणा व्यपिबत् क्षत्रं पयः सोमम्प्रजापतिः।
ऋतेन सत्य मिन्द्रियं विपान ७ शुक्र मन्धस इन्द्रस्येन्द्रिय मिदं पयोऽमृतं मधु॥

- हिम कुन्दमृणालाभं दैत्यानां परमं गुरुम्।
सर्वशास्त्र प्रवक्तारं भार्गवं प्रणमाम्यहम्॥ शुक्राय नमः स्वाहा।

७. **शनिम्**

ॐ शन्नो देवी रभिष्टय आपो भवन्तु पीतये। शंय्यो रभि स्त्रवन्तु नः॥

- नीलांजनसमाभासं रविपुत्रं यमाग्रजं।
छाया मार्तण्ड संभूतं तन्नमामि शनैश्चरम्॥ शनैश्चराय नमः स्वाहा।

८. **राहुम्**

ॐ कयानश्चित्र ऽ आभुवदूती सदावृधः सखा। कया शचिष्ठया वृता॥

- अर्द्धकायं महावीर्यं चन्द्रादित्य विमर्दनम्।
सिंहिका गर्भ संभूतं तं राहुं प्रणमाम्यहम्॥ राहवे नमः स्वाहा।

९. **केतुम्**

ॐ केतुं कृण्वन्न केतवे पेशो मर्या अपेशसे। समुषद्भिरजायथाः॥

- पलाश पुष्प संकाशं तारका ग्रह मस्तकम्।
रौद्रं रौद्रत्मकं घोरं तं केतु प्रणमाम्यहम्॥ केतवे नमः स्वाहा।

- षोडश मातृका होम

ॐ अम्बे अम्बिके अम्बालिके नमानयति कश्चन।
ससत्स्यश्वकः सुभद्रिकां काम्पीलवासिनीं॥

- गौरी पद्मा शची मेधा, सावित्री विजया जया।
देवसेना स्वधा स्वाहा, मातरो लोकमातरः॥
धृतिः पुष्टिस्तथा तुष्टिः, आत्मनः कुलदेवता।
गणेशेनाधिका ह्येता, वृद्धौ पूज्याश्च षोडश॥

1. ॐ गणपतये नमः स्वाहा।
2. ॐ गौर्यै नमः स्वाहा।
3. ॐ पद्मायै नमः स्वाहा।
4. ॐ शच्यै नमः स्वाहा।
5. ॐ मेधायै नमः स्वाहा।
6. ॐ सावित्र्यै नमः स्वाहा।
7. ॐ विजयायै नमः स्वाहा।
8. ॐ जयायै नमः स्वाहा।
9. ॐ देवसेनायै नमः स्वाहा।
10. ॐ स्वधायै नमः स्वाहा।
11. ॐ स्वाहायै नमः स्वाहा।
12. ॐ मातृभ्यो नमः स्वाहा।
13. ॐ लोकमातृभ्यो नमः:स्वाहा।
14. ॐ धृत्यै नमः स्वाहा।
15. ॐ पुष्टयै नमः स्वाहा।
16. ॐ तुष्टयै नमः स्वाहा।
17. ॐ आत्मनः कुल देवतायै नमः स्वाहा।

• प्रधान होम विश्वकर्मा अष्टोत्तरशत नाम हवन

1. ॐ विश्वकर्मणे नमः स्वाहा।
2. ॐ विश्वात्मने नमः स्वाहा।
3. ॐ विश्वस्माय नमः स्वाहा।
4. ॐ विश्वधाराय नमः स्वाहा।
5. ॐ विश्वधर्माय नमः स्वाहा।
6. ॐ विरजे नमः स्वाहा।
7. ॐ विश्वेक्ष्वराय नमः स्वाहा।
8. ॐ विष्णवे नमः स्वाहा।
9. ॐ विश्वधराय नमः स्वाहा।
10. ॐ विश्वकराय नमः स्वाहा।
11. ॐ वास्तोष्पतये नमः स्वाहा।
12. ॐ विश्वभंराय नमः स्वाहा।
13. ॐ वर्मिणे नमः स्वाहा।
14. ॐ वरदाय नमः स्वाहा।
15. ॐ विश्वेशाधिपतये नमः स्वाहा।
16. ॐ वितलाय नमः स्वाहा।
17. ॐ विशभुंजाय नमः स्वाहा।
18. ॐ विश्वव्यापिने नमः स्वाहा।
19. ॐ देवाय नमः स्वाहा।
20. ॐ धार्मिणे नमः स्वाहा।
21. ॐ धीराय नमः स्वाहा।
22. ॐ धराय नमः स्वाहा।
23. ॐ परात्मने नमः स्वाहा।
24. ॐ पुरुषाय नमः स्वाहा।
25. ॐ धर्मात्मने नमः स्वाहा।
26. ॐ श्वेतांगाय नमः स्वाहा।
27. ॐ श्वेतवस्त्राय नमः स्वाहा।
28. ॐ हंसवाहनाय नमः स्वाहा।
29. ॐ त्रिगुणात्मने नमः स्वाहा।
30. ॐ सत्यात्मने नमः स्वाहा।
31. ॐ गुणवल्लभाय नमः स्वाहा।
32. ॐ भूकल्पाय नमः स्वाहा।
33. ॐ भूलेंकाय नमः स्वाहा।
34. ॐ भुवलेकाय नमः स्वाहा।
35. ॐ चतुर्भुजय नमः स्वाहा।
36. ॐ विश्वरुपाय नमः स्वाहा।
37. ॐ विश्वव्यापक नमः स्वाहा।
38. ॐ अनन्ताय नमः स्वाहा।
39. ॐ अन्ताय नमः स्वाहा।
40. ॐ आह्माने नमः स्वाहा।
41. ॐ अतलाय नमः स्वाहा।
42. ॐ आघ्रात्मने नमः स्वाहा।
43. ॐ अनन्तमुखाय नमः स्वाहा।
44. ॐ अनन्तभूजाय नमः स्वाहा।
45. ॐ अनन्तयक्षुय नमः स्वाहा।
46. ॐ अनन्तकल्पाय नमः स्वाहा।
47. ॐ अनन्तशक्तिभूते नमः स्वाहा।
48. ॐ अतिसूक्ष्माय नमः स्वाहा।
49. ॐ त्रिनेत्राय नमः स्वाहा।
50. ॐ कंबीघराय नमः स्वाहा।
51. ॐ ज्ञानमुद्राय नमः स्वाहा।
52. ॐ सूत्रात्मने नमः स्वाहा।
53. ॐ सूत्रधराय नमः स्वाहा।
54. ॐ महलोकाय नमः स्वाहा।
55. ॐ जनलोकाय नमः स्वाहा।
56. ॐ तषोलोकाय नमः स्वाहा।
57. ॐ सत्यकोकाय नमः स्वाहा।
58. ॐ सुतलाय नमः स्वाहा।
59. ॐ सलातलाय नमः स्वाहा।
60. ॐ महातलाय नमः स्वाहा।
61. ॐ रसातलाय नमः स्वाहा।
62. ॐ पातालाय नमः स्वाहा।
63. ॐ मनुषपिणे नमः स्वाहा।
64. ॐ त्वष्टे नमः स्वाहा।
65. ॐ देवज्ञाय नमः स्वाहा।
66. ॐ पूर्णप्रभाय नमः स्वाहा।
67. ॐ ह्रदयवासिने नमः स्वाहा।
68. ॐ दुष्टदमनाथ नमः स्वाहा।
69. ॐ देवधराय नमः स्वाहा।
70. ॐ स्थिर कराय नमः स्वाहा।
71. ॐ वासपात्रे नमः स्वाहा।
72. ॐ पूर्णानंदाय नमः स्वाहा।
73. ॐ सानन्दाय नमः स्वाहा।
74. ॐ सर्वेश्वरांय नमः स्वाहा।
75. ॐ परमेश्वराय नमः स्वाहा।
76. ॐ तेजात्मने नमः स्वाहा।
77. ॐ परमात्मने नमः स्वाहा।
78. ॐ कृतिपतये नमः स्वाहा।
79. ॐ बृहद् स्मणय नमः स्वाहा।
80. ॐ ब्रह्मांडाय नमः स्वाहा।
81. ॐ भुवनपतये नमः स्वाहा।
82. ॐ त्रिभुवनाथ नमः स्वाहा।
83. ॐ सतातनाथ नमः स्वाहा।
84. ॐ सर्वादये नमः स्वाहा।
85. ॐ कर्षापाय नमः स्वाहा।
86. ॐ हर्षाय नमः स्वाहा।
87. ॐ सुखकत्रे नमः स्वाहा।
88. ॐ दुखहर्त्रे नमः स्वाहा।
89. ॐ निर्विकल्पाय नमः स्वाहा।
90. ॐ निर्विधाय नमः स्वाहा।
91. ॐ निस्माय नमः स्वाहा।
92. ॐ निराधाराय नमः स्वाहा।
93. ॐ निकाकाराय नमः स्वाहा।
94. ॐ महदुर्लभाय नमः स्वाहा।
95. ॐ निमोहाय नमः स्वाहा।
96. ॐ शांतिमुर्तय नमः स्वाहा।
97. ॐ शांतिदात्रे नमः स्वाहा।
98. ॐ मोक्षदात्रे नमः स्वाहा।
99. ॐ स्थवीराय नमः स्वाहा।
100. ॐ सूक्ष्माय नमः स्वाहा।
101. ॐ निर्मोहय नमः स्वाहा।
102. ॐ धराधराय नमः स्वाहा।
103. ॐ स्थूतिस्माय नमः स्वाहा।
104. ॐ विश्वरक्षकाय नमः स्वाहा।
105. ॐ दुर्लभाय नमः स्वाहा।
106. ॐ स्वर्गलोकाय नमः स्वाहा।
107. ॐ पंचवकत्राय नमः स्वाहा।
108. ॐ विश्वलल्लभाय नमः स्वाहा।

- **विश्वकर्मा जी की आहुती (विश्वकर्माष्टकम्)**

  - ॐ ब्रह्म रूपं नमस्तुभ्यं नमस्तुभ्यं पितामहः ।
    विराटाख्य नमस्तुभ्यं विश्वकर्मन् नमो नमः ॥ ॥ १ ॥ स्वाहा
  - आकृति कल्पना नाथं विनस्य च दायकम् ।
    सर्वसिद्धिं प्रदा दात्वं विश्वकर्मन् नमो नमः ॥ ॥ २ ॥ स्वाहा
  - पुस्तकं ज्ञानं सूत्रं वा कम्वोसूत्रं कमण्डलम् ।
    वृद्धः रूपम् महातेजः, विश्वकर्मन् नमो नमः ॥ ॥ ३ ॥ स्वाहा
  - ॐ दशं वै दर्श रूपेण नाना संकट हारकम् ।
    तारका नादि संसारात्, विश्वकर्मन् नमो नमः ॥ ॥ ४ ॥ स्वाहा
  - ॐ ब्रह्माण्डं अखिल देवानां स्थानं सर्वभूतलम् ।
    लीलया रचितम् येन विश्वकर्मन् नमो नमः ॥ ॥ ५ ॥ स्वाहा
  - ॐ विश्व व्यपिन् नमस्तुभ्य त्र्यम्बकं हंश-वाहनम् ।
    सर्व क्षेत्राय निवा साख्य, विश्कर्मन् नमो नमः ॥ ॥ ६ ॥ स्वाहा
  - ॐ नीराभाषाय नित्याय सत्यंज्ञानान्त रात्मने ।
    विशुद्धाय विदुराय, च विश्वकर्मन् नमो नमः ॥ ॥ ७ ॥ स्वाहा
  - ॐ नमो वेदान्त वेदाय वेदमूले निवासिने ।
    नमो विविक्त चेष्ठाय, विश्वकर्मन् नमो नमः ॥ ॥ ८ ॥ स्वाहा
  - ॐ त्रैलोक्य सूत्रकर्तारम् चतुर्भजं विश्वदर्सितम् ।
    विश्वकर्मन् वृद्धस्य रूपं यज्ञेऽस्मिन् संन्निधौभवः ॥ ॥ ९ ॥ स्वाहा
  - ॐ देव शिल्पी महाभागा देवानाम् कार्य सारका ।
    विश्वकर्मन् नमस्तुभ्यं सर्वा भीष्टप्रदायकः ॥ ॥१०॥ स्वाहा
  - ॐ शिल्पा चार्याय देवाय नमस्ते, विश्व कर्मणे ।
    मनुवे मयाय त्वस्ट्रे शिल्पिने देवज्ञ ते नमः ॥ ॥११॥ स्वाहा

- विश्वकर्मा गायत्री — **ॐ सर्वरूपाय विद्महे विश्वकर्मणे धीमहि तन्नो पारब्रह्म प्रचोदयात् ।** स्वाहा
- विश्वकर्मा आहुति — **ॐ विश्वकर्मणे नमः ।** स्वाहा । 108 नाम से आहुति दें ।
- दस दिगपाल — **ॐ दस दिग्पालाय नमः ।** स्वाहा ।
- पंचलोक आहुति —
  1. ॐ गणेशाय नमः स्वाहा
  2. ॐ दुर्गाय नमः स्वाहा
  3. ॐ वायवे नमः स्वाहा
  4. ॐ व्योमाय नमः स्वाहा
  5. ॐ अश्विनिभ्या नमः स्वाहा
  6. ॐ क्षेत्रपालाय नमः स्वाहा
  7. ॐ वास्तु देवताभ्यो नमः स्वाहा
  8. ॐ कुल देवताभ्यो नमः स्वाहा
  9. ॐ ग्राम देवताभ्यो नमः स्वाहा
  10. ॐ विश्वकर्मणे नमः स्वाहा

॥ पुरुष सुक्त से आहुति ॥

- ॐ सहस्र शीर्षा पुरुषः सहस्राक्षः सहस्र पात् ।
  स भूमि ७ सर्व तस्पृत्वा ऽत्यतिष्ठद् दशांगुलम् ॥ ॥ १॥
- पुरुषऽ एव इद ७ सर्वम् यद्भूतम् यच्च भाव्यम् ।
  उता मृत त्वस्ये शानो यदन्ने ना तिरोहति ॥ ॥ २॥
- एतावानस्य महिमातो ज्यायांश्च पुरुषः ।
  पादोऽस्य विश्वा भूतानि त्रिपादस्या मृतन्दिवि ॥ ॥ ३॥
- त्रिपाद् उर्ध्व उदैत् पुरूषः पादोऽस्येहा भवत्पुनः ।
  ततो विष्वङ् व्यक्रा मत्सा शना नशनेऽ अभि ॥ ॥ ४॥
- ततो विराड् जायत विराजोऽ अधि पुरुषः ।
  सजातो अत्य रिच्यत पश्चाद् भूमि मथोपुरः ॥ ॥ ५॥
- तस्मात् यज्ञात् सर्वहुतः सम्भृतम् पृषदाज्यम् ।
  पशूँस्ताँश्चक्रे वायव्या नारण्या ग्राम्याश्च ये ॥ ॥ ६॥
- तस्मात् यज्ञात् सर्वहुत ऋचः सामानि जज्ञिरे ।
  छन्दा ७ सि जज्ञिरे तस्मात् यजुस तस्माद् जायत ॥ ॥ ७॥
- तस्मा दश्वा ऽ अजायन्त ये के चो भयादतः ।
  गावो ह जज्ञिरे तस्मात् तस्मात् जाता अजावयः ॥ ॥ ८॥
- तं यज्ञम् बर्हिषि प्रौक्षन् पुरुषम् जात मग्रतः ।
  तेन देवाऽ अयजन्त साध्याऽ ऋषयश्च ये ॥ ॥ ९॥
- यत् पुरुषम् व्यदधुः कतिधा व्यकल्पयन् ।
  मुखम् किमस्यासीत् किम् बाहू किमूरू पादाऽ उच्येते ॥ ॥१०॥
- ब्राह्मणो ऽस्य मुखमासीद् बाहू राजन्यः कृतः ।
  ऊरू तदस्य यद्वैश्यः पद्भ्या ७ शूद्रो अजायत ॥ ॥११॥
- चन्द्रमा मनसो जातश्चक्षोः सूर्यो अजायत ।
  श्रोत्राद् वायुश्च प्राणश्च मुखादग्निरजायत ॥ ॥१२॥
- नाभ्याऽ आसीदन्तरिक्ष ७ शीर्ष्णो द्यौः सम-वर्तत ।
  पद्भ्यां भूमिर्दिशः श्रोत्रात् तथा लोकान्ऽ अकल्पयन् ॥ ॥१३॥
- यत्पुरुषेण हविषा देवा यज्ञ मतन्वत ।
  वसन्तो ऽ स्यासी दाज्यं ग्रीष्मऽ इध्मः शरद्धविः ॥ ॥१४॥
- सप्तास्या सन्परिधयस्त्रिः सप्त समिधः कृताः ।
  देवा यद्यज्ञन् तन्वानाः अबध्नन् पुरुषम् पशुम् ॥ ॥१५॥
- यज्ञेन यज्ञ मऽयजन्त देवा स्तानि धर्माणि प्रथमान्यासन् ।
  तेह नाकम् महिमानः सचन्त यत्र पूर्वे साध्याः सन्ति देवाः ॥ ॥१६॥

॥ श्रीसूक्त से आहुति ॥

- हिरण्यवर्णां हरिणीं सुवर्णरजतस्रजाम् ।
  चन्द्रां हिरण्मयीं लक्ष्मीं जातवेदोममावह ॥ ॥ १॥
- तां म आवह जातवेदोलक्ष्मीमनपगामिनीम् ।
  यस्यां हिरण्यं विन्देयं गामश्वं पुरुषानहम् ॥ ॥ २॥
- अश्वपूर्वां रथमध्यां हस्तिनादप्रमोदिनीम् ।
  श्रियं देवीमुपह्वये श्रीर्मा देवी जुषताम् ॥ ॥ ३॥
- कांसोस्मि तां हिरण्यप्राकारामार्द्रां ज्वलन्तीं तृप्तां तर्पयन्तीम् ।
  पद्मेस्थितां पद्मवर्णां तामिहोपह्वये श्रियम् ॥ ॥ ४॥
- चन्द्रां प्रभासां यशसा ज्वलंतीं श्रियं लोके देवजुष्टामुदाराम् ।
  तां पद्मिनीमीं शरणमहं प्रपद्येऽलक्ष्मीर्मे नश्यतांत्वां वृणे ॥ ॥ ५॥
- आदित्यवर्णे तपसोऽधिजातो वनस्पतिस्तव वृक्षोऽथ बिल्वः।
  तस्य फलानि तपसानुदन्तुमायान्तरायाश्च बाह्या अलक्ष्मीः॥ ॥ ६॥
- उपैतु मां देवसखः कीर्तिश्च मणिना सह ।
  प्रादुर्भूतोऽस्मि राष्ट्रेस्मिन्कीर्तिमृद्धिं ददातु मे ॥ ॥ ७॥
- क्षुत्पिपासामलां ज्येष्ठामलक्ष्मीं नाशयाम्यहम् ।
  अभूतिमसमृद्धिं च सर्वां निर्णुदमे गृहात् ॥ ॥ ८॥
- गन्धद्वारां दुराधर्षां नित्यपुष्टां करीषिणीम् ।
  ईश्वरींसर्वभूतानां तामिहोपह्वये श्रियम् ॥ ॥ ९॥
- मनसः काममाकूतिं वाचः सत्यमशीमहि ।
  पशूनां रूपमन्नस्य मयि श्रीः श्रयतांयशः ॥ ॥१०॥
- कर्दमेन प्रजाभूतामयि सम्भवकर्दम ।
  श्रियं वासय मे कुले मातरं पद्ममालिनीम् ॥ ॥११॥
- आपः सृजन्तुस्निग्धानि चिक्लीतवसमे गृहे ।
  निचदेवीं मातरं श्रियं वासय मे कुले ॥ ॥१२॥
- आर्द्रां पुष्करिणीं पुष्टिं सुवर्णां हेममालिनीम् ।
  सूर्यां हिरण्मयीं लक्ष्मीं जातवेदोम आवह ॥ ॥१३॥
- आर्द्रां यःकरिणीं यष्टिं पिङ्गलां पद्ममालिनीम् ।
  चन्द्रां हिरण्मयीं लक्ष्मीं जातवेदोम आवह ॥ ॥१४॥
- तां म आवह जातवेदोलक्ष्मीमनपगामिनीम् ।
  यस्यां हिरण्यं प्रभूतं गावोदास्योश्वान्विन्देयं पुरुषानहम् ॥ ॥१५॥
- यः शुचिः प्रयतो भूत्वा जुहुयादाज्यमन्वहम् ।
  सूक्तं पञ्चदशर्चं च श्रीकामः सततं जपेत् ॥ ॥१६॥

- उत्तर-पूजन (अग्नि) **ॐ स्वाहा स्वधा-युताय बल-वर्धन नामाग्नये नमः।**
    - अग्निदेव का गन्ध आदि उपचार से संक्षेप में उत्तर-पूजन करे।
- प्रार्थना (अग्नि) **श्रद्धां मेधां यशः प्रज्ञां विद्यां बुद्धिं बलं श्रियम्।**
  आयुष्यं द्रव्यमारोग्यं देहि मे हव्यवाहन॥
- इसके बाद **ॐ अङ्गानि च मा आप्यायन्ताम्।**
    - हाथों से अग्निदेव को अपने सम्पूर्ण शरीर में धारण करने की भावना करे।
- स्विष्टकृत् होम हवन से अवशिष्ट हवि द्रव्य को लेकर स्विष्टकृत् होम करें।
    - जाने-अनजाने में हवन करते समय जो भी गलती हो गयी हो, उसके प्रायश्चित के रूप में गुड़ व घृत की आहुति दें।
    - **ॐ अग्नये स्विष्टकृते स्वाहा** इदमग्नये स्विष्टकृते न मम।
    - **प्रोक्षण्यां त्यागः** उदक स्पर्शः

- भूः आदि नव आहुतियाँ
    १. **ॐ भूः स्वाहा।** इदं अग्नये न मम।
    २. **ॐ भुवः स्वाहा।** इदं वायवे न मम।
    ३. **ॐ स्वः स्वाहा।** इदं सूर्याय न मम।
    ४. **ॐ अग्नीवरुणाभ्यां स्वाहा।** इदं अग्नी वरुणाभ्यां न मम।
    ५. **ॐ अग्नीवरुणाभ्यां स्वाहा।** इदं अग्नी वरुणाभ्यां न मम।
    ६. **ॐ अग्नये स्वाहा।** इदं अग्नये अयसे न मम।
    ७. **ॐ वरुणाय सवित्रे विष्णवे विश्वेभ्यो देवेभ्यो मरुदभ्यः स्वर्केभ्यश्च स्वाहा।**
    इदं वरुणाय सवित्रे विष्णवे विश्वेभ्यो देवेभ्यो मरुदभ्यः स्वर्केभ्यश्च न मम।
    ८. **ॐ वरुणायादित्यायादितये स्वाहा।** इदं वरुणायादित्यादितये न मम।
    ९. **ॐ प्रजापतये स्वाहा।** इदं प्रजापतये न मम।

- **बलिदानम्** — **इन्द्रादिदशदिक्पाल देवता बलिदानम् (एकतंत्रेण)**

- मंत्र — ॐ प्राच्यै दिशे स्वाहा ऽर्वाच्यै दिशे स्वाहा, दक्षिणायै दिशे स्वाहा ऽर्वाच्यै दिशे स्वाहा, प्रतीच्यै दिशे स्वाहा ऽर्वाच्यै दिशे स्वाहा, दीच्यै दिशे स्वाहा ऽर्वाच्यै दिशे स्वाहो, ध्र्यायै दिशे स्वाहा ऽर्वाच्यै दिशे स्वाहा ॥
- संकल्प — इन्द्रादिदशदिक्पालान् सांगान् । सपरिवारान् । सायुधान् । सशक्तिकान् । एभिर्गंधाद्युपचारैः युष्मान् अहं पूजयामि ।
- हस्ते जलमादाय — इन्द्रादिदशदिक्पालान् सांगेभ्य । सपरिवारेभ्य । सायुधेभ्य । सशक्तिकेभ्य इमं सदीप माषभक्त बलिं समर्पयामि ॥
- हाथ जोडकर रखें — भो इन्द्रादिदशदिक्पाल देवाः दिशं रक्षत बलिं भक्षत मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य अभ्युदयं कुरुत । आयुः कर्तारः क्षेमकर्तारः शांतिकर्तारः पुष्टिकर्तारः तुष्टिकर्तारः निर्विघ्नकर्तारः कल्याणकर्तारः वरदा भवत ।
- अर्पण करें — अनेन पूजन पूर्वक बलिदानेन इन्द्रादिदशदिक्पाल देवाः प्रीयन्ताम् ।

क्षेत्रपाल बलिदानम्

- संकल्प — ॐ अद्येत्यादि मम सकलारिष्ट शान्ति पूर्वकं प्रारब्ध कर्मणाः सांगता सिद्ध्यर्थञ्च क्षेत्रपाल पूजनं बलिदानञ्च करिष्ये ।
- बलिदान मंत्र — ॐ नमामि क्षेत्रपाल त्वां भूतप्रेतगणाधिप ।
  पूजां बलिं गृहाणेमं सौम्यो भवतु सर्वदा ॥ ॥ १ ॥
  आयु आरोग्यं मे देहि निर्विघ्नं कुरु सर्वदा ।
  मा विघ्नं मास्तु मे पापं मा सन्तु परिपन्थिनः ॥ ॥ २ ॥
  मा विघ्नं मास्तु मे पापं मा सन्तु परिपंथिनः ।
  सौम्या भवन्तु तृप्ताश्च भूतप्रेताः सुखावहाः ॥ ॥ ३ ॥
- हस्ते जलमादाय — ॐ क्षेत्रपालाय डाकिनी-शाकिनी-भूत-प्रेत-बैताल-पिशाच सहिताय इमं सदीपं आसादित बलिं समर्पयामि ॥
- हाथ जोडकर रखें — भो भो क्षेत्रपाल दिशं रक्ष बलिं भक्ष मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य अभ्युदयं कुरुत । मम गृहे आयुः कर्ता । क्षेमकर्ता । शांतिकर्ता । पुष्टिकर्ता । तुष्टिकर्ता । निर्विघ्नकर्ता । कल्याणकर्ता वरदा भव ।
- अर्पण करें — अनेन पूजन पूर्वक बलिदानेन क्षेत्रपाल देवताः प्रीयतां न मम् ।
- पीली सरसौ छिडके — ॐ भूताय त्वा नारातये स्वरभि विख्येषं दृ ७ हन्तां दुर्याः पृथिव्या मुर्वन्तरिक्ष मन्वेमि । पृथिव्यास्त्वा नाभौ सादयाम्य दित्या ऽउपस्थेऽग्ने हव्य ७ रक्ष ॥

- संकल्प प्रारब्धस्य कर्मणः सांगता सिद्ध्यर्थंम् वसोर्धारा-समन्वितं पूर्णाहुति होमं करिष्ये।

- पूर्णाहुति मंत्र मुख्य यजमान हाथ में नारियल ले ले व अन्य सभी लोग नारियल का स्पर्श कर लें। यजमान निम्न मंत्र उच्चारण करते हुए नारियल के ऊपर घी की धारा डालें ...
  - **ॐ पूर्णमदः पूर्णमिदं पूर्णात् पूर्णमुदच्यते।**
    पूर्णस्य पूर्णमादाय पूर्णमेवा वशिष्यते॥

- वसोर्धारा **ॐ वसोः पवित्रमसि शतधारं वसोः पवित्रामसि सहस्त्रधारम्।**
  देवस्त्वा सविता पुनातु वसोः पवित्रेण शतधारेण सुप्वा कामधुक्षः॥

- प्रदक्षिणा (अग्नि) यजमान अग्नि की प्रदक्षिणा करे।

- भस्म धारणम् अग्नि के इशान कोण से स्त्रुवा द्वारा भस्म लेकर अनामिका अंगुली से अपने लगा लें।
  - **ॐ त्रयायुषं जमदग्नेरिति** ललाटे।
  - **कश्यपस्य त्र्यायुषम्** ग्रीवा में।
  - **यद्-देवेषु त्र्यायुषम्** दक्षिण बाहु में।
  - **तन्नो अस्तु त्र्यायुषम्** हृदय में।

- संस्त्रव प्राशनम् प्रोक्षणी पात्र के जल में आहुति से बचा जो घृत छोड़ा गया है, उसको यजमान थोड़ा ग्रहण कर ले अथवा सूँघ ले। तदनन्तर आचमन करे।
  - **ॐ यस्माद्यज्ञपुरोडाशाद्यज्वानो ब्रह्मरूपिणः।**
    तं संश्रवपुरोडाशं प्राश्नामि सुखपुण्यदम्॥

- उत्तर-पूजन कथा-श्रवण तथा हवन के उपरान्त संक्षेप में गन्धाक्षत-पुष्प आदि उपचारों से भगवान् विश्वकर्मा तथा आवाहित देवताओं का उत्तर-पूजन करे।

॥ श्री विश्वकर्मा जी की आरती ॥

- ॐ जय श्री विश्वकर्मा, स्वामी जय श्री विश्वकर्मा।
  सकल सृष्टि के कर्ता, रक्षक श्रुति धर्मा॥ ॥ १ ॥ ॐ जय श्री विश्वकर्मा ..... ।

- आदि सृष्टि में विधि को, श्रुति उपदेश दिया। स्वामी श्रुति उपदेश दिया।
  शिल्प शस्त्र का जग में, ज्ञान विकास किया॥ ॥ २ ॥ ॐ जय श्री विश्वकर्मा ..... ।

- ऋषि अंगिरा ने तप से, शान्ति नही पाई। स्वामी शान्ति नहीं पाई।
  ध्यान किया जब प्रभु का, सकल सिद्धि आई॥ ॥ ३ ॥ ॐ जय श्री विश्वकर्मा ..... ।

- रोग ग्रस्त राजा ने, जब आश्रय लीन्हा। स्वामी जब आश्रय लीन्हा।
  संकट मोचन बनकर, दूर दुख कीना॥ ॥ ४ ॥ ॐ जय श्री विश्वकर्मा ..... ।

- जब रथकार दम्पती, तुम्हरी टेर करी। स्वामी तुम्हरी टेर करी।
  सुनकर दीन प्रार्थना, विपत्ति हरी सगरी॥ ॥ ५ ॥ ॐ जय श्री विश्वकर्मा ..... ।

- एकानन चतुरानन, पंचानन राजे। स्वामी पंचानन राजे।
  द्विभुज, चतुर्भुज, दशभुज, सकल रूप साजे॥ ॥ ६ ॥ ॐ जय श्री विश्वकर्मा ..... ।

- ध्यान धरे जब पद का, सकल सिद्धि आवे। स्वामी सकल सिद्धि आवे।
  मन दुविधा मिट जावै, अटल शान्ति पावे॥ ॥ ७ ॥ ॐ जय श्री विश्वकर्मा ..... ।

- श्री विश्वकर्मा जी की आरती, जो कोई नर गावे। स्वामी जो कोई नर गावे।
  कहत गजानन स्वामी, सुख सम्पत्ति पावै॥ ॥ ८ ॥ ॐ जय श्री विश्वकर्मा ..... ।

॥ जगदीश जी की आरती ॥

- ॐ जय जगदीश हरे, स्वामी जय जगदीश हरे ।
  भक्तजनों के संकट क्षण में दूर करे ॥ ॥ १ ॥ ॐ जय जगदीश हरे ..... ।

- जो ध्यावे फल पावै, दुख बिनसे मन का ।
  सुख-संपत्ति घर आवै, कष्ट मिटे तन का ॥ ॥ २ ॥ ॐ जय जगदीश हरे ..... ।

- मात-पिता तुम मेरे, शरण गहूं किसकी ।
  तुम बिनु और न दूजा, आस करूं जिसकी ॥ ३ ॥ ॐ जय जगदीश हरे ..... ।

- तुम पूरन परमात्मा, तुम अंतरयामी ।
  पारब्रह्म परेमश्वर, तुम सबके स्वामी ॥ ॥ ४ ॥ ॐ जय जगदीश हरे ..... ।

- तुम करुणा के सागर, तुम पालन कर्ता ।
  मैं मूरख खल कामी, कृपा करो भर्ता ॥ ॥ ५ ॥ ॐ जय जगदीश हरे ..... ।

- तुम हो एक अगोचर, सबके प्राणपति ।
  किस विधि मिलूं दयामय, तुमको मैं कुमति ॥ ॥ ६ ॥ ॐ जय जगदीश हरे ..... ।

- दीनबंधु दुखहर्ता, तुम ठाकुर मेरे ।
  अपने हाथ उठाओ, द्वार पड़ा तेरे ॥ ॥ ७ ॥ ॐ जय जगदीश हरे ..... ।

- विषय विकार मिटाओ, पाप हरो देवा ।
  श्रद्धा-भक्ति बढ़ाओ, संतन की सेवा ॥ ॥ ८ ॥ ॐ जय जगदीश हरे ..... ।

- तन-मन-धन, सब कुछ है तेरा ।
  तेरा तुझको अर्पण, क्या लागे मेरा ॥ ॥ ९ ॥ ॐ जय जगदीश हरे ..... ।

- श्याम सुंदर जी की आरती, जो कोई नर गावे ।
  कहत शिवानंद स्वामी, मनवांछित फल पावे ॥ ॥१०॥ ॐ जय जगदीश हरे ..... ।

- पुष्पांजलि **ॐ यज्ञेन यज्ञ मयजन्त देवा स्तानि धर्माणि प्रथमान्यासन् ।**
  ते ह नाकं महिमानः सचन्त यत्र पूर्वे साध्याः सन्ति देवाः ॥
  - **नानासुगन्धि पुष्पाणि यथा कालोद्भवानि च ।**
    पुष्पाञ्जलिर्मया दत्तं गृहाण परमेश्वर ॥

- प्रदक्षिणा **ॐ ये तीर्थानि प्रचरन्ति सृका हस्ता निषङ्गिणः ।**
  तेषा ७ सहस्र योजनेऽ वधन्वा नितन्मसि ॥
  - **यानि कानि च पापानि जन्मान्तर कृतानि च ।**
    तानि सर्वाणि नश्यन्तु प्रदक्षिण पदे पदे ॥

- साष्टांग प्रणाम सभी साष्टांग प्रणाम करेंगे ।

- स्तुति-प्रार्थना **नमोऽस्त्वनन्ताय सहस्र-मूर्तये सहस्त्र-पादा-क्षिशिरो-रुवाहवे ।**
  सहस्त्रनाम्ने पुरुषाय शाश्वते सहस्त्र-कोटी-युग-धारिणे नमः ॥
  - **आकाशात् पतितं तोयं यथा गच्छति सागरम् ।**
    सर्वदेवनमस्कारः केशवं प्रति गच्छति ॥

- प्रणाम **त्वमेव माता च पिता त्वमेव, त्वमेव बन्धुश्च सखा त्वमेव ।**
  त्वमेव विद्या द्रविणं त्वमेव, त्वमेव सर्वं मम देव देव ॥
  - **कायेन वाचा मनसेन्द्रियैर्वा, बुद्ध्यात्मना वा प्रकृतिस्वभावात् ।**
    करोमि यद्यत् सकलं परस्मै, नारायणायेति समर्पयामि ॥
  - **पापोहं पाप कर्माहं पापात्मा पापसम्भवः ।**
    त्राहिमां पार्वती नाथ सर्वपापहरो भव ॥

- क्षमा प्रार्थना **मन्त्रहीनं क्रियाहीनं भक्तिहीनं सुरेश्वर ।**
  यत्पूजितं मया देव परिपूर्ण तदस्तु मे ॥
  - **आवाहनं न जानामि न जानामि विसर्जनम् ।**
    पूजां चैव न जानामि क्षमस्व देवशिल्पी ॥

- अर्पण अनेन कृतेन पूजनेन विश्वकर्मा पूजन पद्धति कर्मणा श्रीपरमेश्वरः प्रीयताम्, न मम ।

- दक्षिणा ॐ यथोक्त गुण विशिष्ट तिथ्यादौ अद्य अमुक गोत्रः, अमुक शर्मा, कृतस्य विश्वकर्मा पूजन कर्मणः सांगता सिद्ध्यर्थं तत्सम्पूर्ण फल प्राप्त्यर्थं च अमुक कर्तृकेभ्यो नाना नाम गोत्रेभ्यो ब्राह्मणेभ्यो मनसेप्सितां दक्षिणां विभज्य दातुमुत्सृज्ये ।
  - **नमो ब्रह्मण्यदेवाय गोब्राह्मण-हिताय च ।**
    जगद्धिताय कृष्णाय गोविन्दाय नमो नमः ॥

- विसर्जन
  ॐ यान्तु देव-गणाः सर्वे, पूजामादाय मामिकाम ।
  इष्ट-काम-समृद्धयर्थं, पुनरा-गमनाय च ॥
  - **गच्छ गच्छ सुरश्रेष्ठ स्वस्थाने परमेश्वर ।**
    यत्र ब्रम्हादयो देवास्तत्र गच्छ हुताशन ॥

- प्रार्थना
  प्रमादात् कुर्वतां कर्म प्रच्यवेता ध्वरेषु यत् ।
  स्मरणादेव तद्विष्णोः सम्पूर्णं स्यादिति श्रुतिः ॥
  - **यस्य स्मृत्या च नामोक्त्या तपो यज्ञ क्रियादिषु ।**
    न्यूनं सम्पूर्णतां याति सद्यो वन्दे तमच्युतम् ॥
  - ॐ विष्णवे नमः । ॐ विष्णवे नमः । ॐ विष्णवे नमः ।

- प्रसाद ग्रहण
  प्रसादे सर्वदुःखानां हानिरस्योप जायते ।
  प्रसन्नचेतसो ह्याशु बुद्धिः पर्यवतिष्ठते ॥

- आशिर्वाद
  श्री वर्चस्व मायुष्य मारोग्यं गावधात् पवमानं महीयते ।
  धन धान्यं पशुं बहुपुत्र लाभं शतसंवत्सरे दीर्घमायु ।
  - **ॐ सफला सन्तु पूर्णा : सन्तु मनोरथा : ।**
    शत्रूणां बुद्धि नाशोस्तु मित्राणां मुदयस्तव ॥

- **अभिषेक** आचार्य कलश के जल से कुशों अथवा आम्रपत्लव आदि के द्वारा यजमान आदि का जल के द्वारा अभिषेक करे।
अभिषेक के समय पत्नी को पति की बायीं ओर बैठना चाहिये।

- **गणाधिपो भानु-शशी-धरासुतो बुधो गुरुर्भार्गवसूर्यनन्दनाः।
राहुश्च केतुश्च परं नवग्रहाः कुर्वन्तु वः पूर्णमनोरथं सदा॥** ॥ १ ॥
- **उपेन्द्र इन्द्रो वरुणो हुताशनस्त्रिविक्रमो भानुसखश्चतुर्भुजः।
गन्धर्व-यक्षोरग-सिद्ध-चारणाः कुर्वन्तु वः पूर्णमनोरथं सदा॥** ॥ २ ॥
- **नलो दधीचिः सगरः पुरूरवा शाकुन्तलेयो भरतो धनञ्जयः।
रामत्रयं वैन्यबली युधिष्ठिरः कुर्वन्तु वः पूर्णमनोरथं सदा॥** ॥ ३ ॥
- **मनु-मरीचि-भृगु-दक्ष-नारदाः पाराशरो व्यास-वसिष्ठ-भार्गवाः।
वाल्मीकि-कुम्भोद्भव-गर्ग-गौतमाः कुर्वन्तु वः पूर्णमनोरथं सदा॥** ॥ ४ ॥
- **रम्भाशची सत्यवती च देवकी गौरी च लक्ष्मीश्च दितिश्च रुक्मिणी।
कूर्मो गजेन्द्रः सचराऽचरा धरा कुर्वन्तु वः पूर्णमनोरथं सदा॥** ॥ ५ ॥
- **गङ्गा च क्षिप्रा यमुना सरस्वती गोदावरी नेत्रवती च नर्मदा।
सा चन्द्रभागा वरुणा त्वसी नदी कुर्वन्तु वः पूर्णमनोरथं सदा॥** ॥ ६ ॥
- **तुङ्ग-प्रभासो गुरुचक्रपुष्करं गया विमुक्ता बदरी वटेश्वरः।
केदार-पम्पासरसश्च नैमिषं कुर्वन्तु वः पूर्णमनोरथं सदा॥** ॥ ७ ॥
- **शङ्खश्च दूर्वासित-पत्र-चामरं मणि प्रदीपो वररत्नकाञ्चनम्।
सम्पूर्णकुम्भः सुहृतो हुताशनः कुर्वन्तु वः पूर्णमनोरथं सदा॥** ॥ ८ ॥
- **प्रयाणकाले यदि वा सुमङ्गले प्रभातकाले च नृपाभिषेचने।
धर्मार्थकामाय जयाय भाषित व्यासेन कुर्यात्तु मनोरथं हि तत्॥** ॥ ९ ॥
- अमृताभिषेकोऽस्तु। शान्तिः पुष्टिस्तुष्टिशास्।

॥ विश्वकर्माष्टकम् ॥

- निरञ्जनो निराकारः निर्विकल्पो मनोहरः ।
  निरामयो निजानन्दः निर्विघ्नाय नमो नमः ॥ ॥ १ ॥

- अनादिरप्रमेयश्च अरूपश्च जयाजयः ।
  लोकरूपो जगन्नाथः विश्वकर्मन्नमो नमः ॥ ॥ २ ॥

- नमो विश्वविहाराय नमो विश्वविहारिणे ।
  नमो विश्वविधाताय नमस्ते विश्वकर्मणे ॥ ॥ ३ ॥

- नमस्ते विश्वरूपाय विश्वभूताय ते नमः ।
  नमो विश्वात्मभूथात्मन् विश्वकर्मन्नमोऽस्तु ते ॥ ॥ ४ ॥

- विश्वायुर्विश्वकर्मा च विश्वमूर्तिः परात्परः ।
  विश्वनाथः पिता चैव विश्वकर्मन्नमोऽस्तु ते ॥ ॥ ५ ॥

- विश्वमङ्गलमाङ्गल्यः विश्वविद्याविनोदितः ।
  विश्वसञ्चारशाली च विश्वकर्मन्नमोऽस्तु ते ॥ ॥ ६ ॥

- विश्वैकविधवृक्षश्च विश्वशाखा महाविधः ।
  शाखोपशाखाश्च तथा तद्वृक्षो विश्वकर्मणः ॥ ॥ ७ ॥

- तद्वृक्षः फलसम्पूर्णः अक्षोभ्यश्च परात्परः ।
  अनुपमानो ब्रह्माण्डः बीजमोङ्कारमेव च ॥ ॥ ८ ॥

॥ इति विश्वकर्माष्टकं सम्पूर्णम् ॥

॥ श्री विश्वकर्मा चालीसा ॥

- दोहा

श्री विश्वकर्म प्रभु वन्दऊँ, चरणकमल धरिध्यान।
श्री, शुभ, बल अरु शिल्पगुण, दीजै दया निधान॥

- जय श्री विश्वकर्म भगवाना।
जय विश्वेश्वर कृपा निधाना॥ ॥ १ ॥
- शिल्पाचार्य परम उपकारी।
भुवना-पुत्र नाम छविकारी॥ ॥ २ ॥
- अष्टमबसु प्रभास-सुत नागर।
शिल्पज्ञान जग कियउ उजागर॥ ॥ ३ ॥
- अद्रभुत सकल सुष्टि के कर्त्ता।
सत्य ज्ञान श्रुति जग हित धर्त्ता॥ ॥ ४ ॥
- अतुल तेज तुम्हतो जग माहीं।
कोइ विश्व मँह जानत नाही॥ ॥ ५ ॥
- विश्व सृष्टि-कर्त्ता विश्वेशा।
अद्रभुत वरण विराज सुवेशा॥ ॥ ६ ॥
- एकानन पंचानन राजे।
द्विभुज चतुर्भुज दशभुज साजे॥ ॥ ७ ॥
- चक्रसुदर्शन धारण कीन्हे।
वारि कमण्डल वर कर लीन्हे॥ ॥ ८ ॥
- शिल्पशास्त्र अरु शंख अनूपा।
सोहत सूत्र माप अनुरूपा॥ ॥ ९ ॥
- धमुष वाण अरू त्रिशूल सोहे।
नौवें हाथ कमल मन मोहे॥ ॥१०॥
- दसवाँ हस्त बरद जग हेतू।
अति भव सिंधु माँहि वर सेतू॥ ॥११॥
- सूरज तेज हरण तुम कियऊ।
अस्त्र शस्त्र जिससे निरमयऊ॥ ॥१२॥
- चक्र शक्ति अरू त्रिशूल एका।
दण्ड पालकी शस्त्र अनेका॥ ॥१३॥
- विष्णुहिं चक्र शुल शंकरहीं।
अजहिं शक्ति दण्ड यमराजहीं॥ ॥१४॥
- इंद्रहिं वज्र व वरूणहिं पाशा।
तुम सबकी पूरण की आशा॥ ॥१५॥
- भाँति – भाँति के अस्त्र रचाये।
सतपथ को प्रभु सदा बचाये॥ ॥१६॥
- अमृत घट के तुम निर्माता।
साधु संत भक्तन सुर त्राता॥ ॥१७॥
- लौह काष्ट ताम्र पाषाना।
स्वर्ण शिल्प के परम सजाना॥ ॥१८॥
- विद्युत अग्नि पवन भू वारी।
इनसे अद् भुत काज सवारी॥ ॥१९॥
- खान पान हित भाजन नाना।
भवन विभिषत विविध विधाना॥ ॥२०॥
- विविध व्सत हित यत्रं अपारा।
विरचेहु तुम समस्त संसारा॥ ॥२१॥
- द्रव्य सुगंधित सुमन अनेका।
विविध महा औषधि सविवेका॥ ॥२२॥

- शंभु विरंचि विष्णु सुरपाला।
  वरुण कुबेर अग्नि यमकाला॥ ॥२३॥
- तुम्हरे ढिग सब मिलकर गयऊ।
  करि प्रमाण पुनि अस्तुति ठयऊ॥ ॥२४॥
- भे आतुर प्रभु लखि सुर–शोका।
  कियउ काज सब भये अशोका॥ ॥२५॥
- अद् भुत रचे यान मनहारी।
  जल-थल-गगन माँहि-समचारी॥ ॥२६॥
- शिव अरु विश्वकर्म प्रभु माँही।
  विज्ञान कह अतंर नाही॥ ॥२७॥
- बरनै कौन स्वरुप तुम्हारा।
  सकल सृष्टि है तव विस्तारा॥ ॥२८॥
- रचेत विश्व हित त्रिविध शरीरा।
  तुम बिन हरै कौन भव हारी॥ ॥२९॥
- मंगल-मूल भगत भय हारी।
  शोक रहित त्रैलोक विहारी॥ ॥३०॥
- चारो युग परपात तुम्हारा।
  अहै प्रसिद्ध विश्व उजियारा॥ ॥३१॥
- ऋद्धि सिद्धि के तुम वर दाता।
  वर विज्ञान वेद के ज्ञाता॥ ॥३२॥
- मनु मय त्वष्टा शिल्पी तक्षा।
  सबकी नित करतें हैं रक्षा॥ ॥३३॥
- पंच पुत्र नित जग हित धर्मा।
  हवै निष्काम करै निज कर्मा॥ ॥३४॥
- प्रभु तुम सम कृपाल नहिं कोई।
  विपदा हरै जगत मँह जोइ॥ ॥३५॥
- जै जै जै भौवन विश्वकर्मा।
  करहु कृपा गुरुदेव सुधर्मा॥ ॥३६॥
- इक सौ आठ जाप कर जोई।
  छीजै विपति महा सुख होई॥ ॥३७॥
- पढाहि जो विश्वकर्म-चालीसा।
  होय सिद्ध साक्षी गौरीशा॥ ॥३८॥
- विश्व विश्वकर्मा प्रभु मेरे।
  हो प्रसन्न हम बालक तेरे॥ ॥३९॥
- मैं हूँ सदा उमापति चेरा।
  सदा करो प्रभु मन मँह डेरा॥ ॥४०॥

- दोहा
  करहु कृपा शंकर सरिस, विश्वकर्मा शिवरुप।
  श्री शुभदा रचना सहित, ह्रदय बसहु सुरभुप॥

॥ इति श्री विश्वकर्मा चालीसा सम्पूर्णम्॥

॥ भगवान श्री विश्वकर्मा की कथा ॥

❖ पहला अध्याय

एक समय अनेक ऋषिगण धर्मक्षेत्र में एकत्र हुए और वहां धर्म के तत्व जानने वाले सूत जी से ऋषि कहने लगें - हे पुराण के मर्मज्ञ, महात्मने, आप हमारे ऊपर अत्यंत कृपा करके हमारे इस अचानक उत्पन्न हुए सशंय का नाश किजीए। हमने सर्व व्यापक विष्णु के अनेक रूप सुने है, उनमें से कौन सा रूप सर्वश्रेष्ठ है, यह हमे बताइयें। हे महात्मा, तुमने संसार के कल्याण के लिए प्रश्न किया है, अतएव मै तुम्हारे लिए सब जगत् पालक परम पूज्य भगवान विष्णु के महाअद्भुत रूप का वर्णन करूगां। हे तपस्वियो, उस परमात्मा के अनन्त रूप है, उनमे जो अनन्तं श्रेष्ठ है, उस रूप को सुनो। उस दिव्य रूप के स्मरणमात्र से महापातकी मनुष्य भी पाप से छुट जाते है, इसमे सशंय नही है। इस ही प्रश्न को संसार के कल्याण के लिए क्षीर-समुद्र में लक्ष्मी ने भगवान विष्णु से एक बार पूछा था।

लक्ष्मी कहने लगी - हे जगन्नाथ। आपके महान् अनेक रूपो को भक्त-मनुष्य भक्तियुक्त होकर पृथ्वी पर पूजते रहते है। हे प्रिय। क्या वे रूप सब समान ही हैं या उनमें गौण या अन्य भेद है।

विष्णु भगवान बोले – हे प्रिय, जब मैं समस्त ब्रह्माण्ड को आत्मा में सहंत करके स्वानुभव रूप से योग-माया के स्थित होता हूँ, तब मैं एक ही बहुरूप धारण करू, इस प्रकार इच्छा करता हुआ अपनी माया के वश में हुआ। जीवों को कर्मभोग के लिए क्षण-मात्र मे असंख्य ब्रह्म-लोकादि लोकों को जिस रूप से रचता हूँ, हे देवी, उस रूप को मैं तुझसे कहता हूँ, तू ध्यान से सुन।

हे देवी, मैं यंहा अद्भुत सब ओर तेज से व्याप्त अनेक सूर्यो की चमक से अधिक चमकने वाले विश्वकर्मा रूप को धारण करता हूँ, और उनके अनन्तर मनुष्य सृष्टि करने की कामना करता हुआ सर्व प्रथम पुण्यात्मा तपस्वी ब्रह्म को रचता हूँ। उस ब्रह्मा की स्तुति यज्ञ और गान के प्रतिपादन करने वाले ऋग, यजुः और सम की अच्छी प्रकार उपदेश देता हूँ। इसी प्रकार शिल्प विद्या प्रतिपादक अथर्व-वेद भी ब्रह्मा को प्रदान करता हूँ। यह वही वेद है जिससे शिल्पी लोगों ने शिल्प निकाल कर अनेक वस्तुओं की रचना की है। हे देवी, मेरे अनेक रूपों में यह विश्वकर्मा रूप मुख्य है। यही रूप है जिससे सारी सृष्टि क्षण-मात्र में उत्पन्न होती है। इस विश्वकर्मा रूप परमात्मा के अद्भुत रूप का जो क्षण-मात्र भी ध्यान करता है, उसके समस्त विघ्न नष्ट हो जाते हैं। जो शिल्पी श्री विश्वकर्मा के प्रोज्जवल दिव्य रूप का ध्यान से चिंतन करता है, उसके समस्त दुःख विदीर्ण हो जाते हैं।

श्री विश्वकर्मा सहितान्तर्गत सृष्टिखण्ड विश्वकर्मा माहात्म्य का पहला अध्याय समाप्त।

❖ दूसरा अध्याय

सूत जी कहने लगे कि हे ऋषियों, इस प्रकार लक्ष्मी जी को अपने दिव्य रुप का वर्णन करके त्रिलोक्य पति भगवान विष्णु चुप हो गये। ऋषि लोग बोले - सर्व धर्म के जानने वाले, महाराज सूत जी, आपने यह दिव्य लक्ष्मी और भगवान विष्णु का दिव्य संवाद कैसे जाना। यह भगवान विष्णु को दिव्य विश्वकर्मा रूप किस प्रकार संसार में प्रसिद्धि को प्राप्त हुआ और कैसे संसार ने इस रूप को जाना। सूत जी बोले, हे मुनियो, सुनो जिस प्रकार मनुष्यों को कामना का देने वाला, यह समाचार मेरे कर्णगोचर है। एक महर्षि अंगिरा नाम वाले हुए है, जिन्होनें हिमालय पर्वत के समीप गंगा तट पर भारी तप किया था। बर्षा ऋतु में तो आवरण रहित स्थान में, शीतकाल में शीतल जल में ग्रीष्म काल में धूप में बैठकर वह अंगिरा मुनि तप करने लगे। तप करते-करते भी उन ऋषि का मन सुखी नहीं था और इधर उधर इस प्रकार दौडता था कि जैसे मृग इधर उधर भागता है।

तभी उस समय अचानक आकाशवाणी हुई कि हे तपोधन, तू वृथा श्रम करता है, लक्ष्य से च्युत हुआ वाण कैसे अपने लक्ष्य को बेध सकता है, वही तेरी गति हो गई है और तू लोक में उपवास को प्राप्त हो रहा है। उत्पत्ति स्थिति सहांर का करने वाला सब को अभीष्ट का सिद्धकर्ता, महा-तेजस्वी विश्वकर्मा संसार में प्रसिद्ध है। उसका पञ्च-मुख और दश-बाहु वाला, महा-दिव्य रूप सरस्वती और लक्ष्मी से पूजित है। उसका तू दिन रात ध्यान कर। इस रुप का स्वंय हरि ने क्षीर समुद्र में उपदेश दिया है। आज भी उनके ध्यान से मेरे रोमांच खडे होते है।

अमावस्या के दिन सब कामों को छोड कर व्रत का आचरण कर और उसी दिन विधि पूर्वक विश्वकर्मा जी की पूजा कर। इस प्रकार आकाश को गूँजा देने वाली वाणी को सुनकर अंगिरा मुनि बडें विस्मय को प्राप्त हुआ और भगवान का ध्यान करने लगे। श्री विश्वकर्मा जी का ध्यान करते समय उनके चित्त में शिल्पज्ञान का धारक, अर्थ सहित अथर्ववेद प्रविष्ट हुआ। उन तत्वज्ञ अंगिरा मुनि ने विमान रचना आदि की अनेक शिल्प विद्याओं का रस अथर्ववेद के ज्ञान से आविर्भाव किया। यह संसार विश्वकर्मा भगवान की कृपा से ही सुखी है, क्योकिं उनके बताये ज्ञान से ही आवश्यक यानादि जगत् बनाता है। तभी से श्री विश्वकर्मा जी का महारूप संसार में प्रसिद्ध हुआ है। परम्परा से आये हुए इस कथानक ने मेरे कानों को भी पवित्र किया है। हे ऋषियों, इस परम रहस्य को जो मनुष्य श्रवण करेंगे, उनकें लिए श्रवण-मात्र से ही ज्ञान प्राप्ति हो जायेगी। यह महाज्योतिः रूप है जो संसार का उपकारक है, वह मनुष्य कृतघ्न और पापी है जो इस रूप का ध्यान नही करता है।

श्री विश्वकर्मा सहितान्तर्गत सृष्टिखण्ड विश्वकर्मा महात्मा का दूसरा अध्याय समाप्त।

❖ तीसरा अध्याय

हे महाराज, आप के द्वारा कहे हुए श्री विश्वकर्मा के चरित्र को श्रवण करते हुए हमारे चित्त की तृप्ति नहीं होती है, अब भी श्री विश्वकर्मा जी के सच्चरित्र के श्रवण की इच्छा इस प्रकार बढती जा रही है जैसे हवा से बार-बार अग्नि बढती है। सूत जी कहने लगे - हे मुनि श्रेष्ठों, एकाग्र मन से आप जगत्पूज्य, सच्चिदानन्दस्वरूप, श्री विश्वकर्मा जी का दिव्य आख्यान सुनों।

प्राचीन काल में एक प्रमंगद नाम का राजा हुआ, जो अपनी प्रजा को संतान के समान पालता था और धर्म के कामों में बिल्कुल प्रमाद नहीं किया करता था। वह अपनी प्रजा का स्नेह से शासन करता था और कभी भी दण्ड से प्रजा का दमन नही करता था। अतएव वह राजा सदा प्रजा की वृद्धि के लिए यत्न करता था, उसका राज्य कृतघ्न और दुष्टों के अभाव के कारण सुखी था। उस राजा की कमल के समान नेत्र वाली, साक्षात सती के समान व्रत परायण कमला नाम भार्या थी। कभी दैवयोग से उस राजा के शरीर में दारूण कुष्ठ रोग उत्पन्न हो गया। बार-बार चिकित्सा के बाद भी वह रोग शांत न हुआ। उस रोग की पीडा से पीडित राजा बडा व्याकुल होने लगा।

ऋषि कहने लगे - हे सुदर्शन। यह पाप रोग धर्म से पृथ्वी पालन करने वाले महात्मा को कैसे हुआ। यदि इस प्रकार धर्मात्माओं को भी रोग उत्पन्न हो जाता है, तो फिर धर्म-कर्म में कौन विश्वास करेगा। सूतजी कहने लगे - हे ऋषियों। उस राजा ने पूर्वजन्म में यह उपदेश दिया था कि यह संसार अनादि हैं, इसका कर्त्ता कोई विश्वकर्मा नहीं है। और वह नास्तिक मत का प्रचारक था। आप जानते हो अनेक जन्मों के पाप-पुण्य कर्म एक जन्म में ही उसका फल नहीं देतें है, अतः उस जन्म मे यह फल प्राप्त हुआ इसमें कोई आश्चर्य नही है। अब मैं तुमसे आगे की कथा कहता हूँ ध्यान से सुनों।

उस राजा को अधिक व्याकुल दखकर, उसके दुःख से दुःखी हुई पतिव्रता बेचारी रानी बोली - हे राजन्, बडा तेजस्वी हमारा कुल पुरोहित अचानक बिल्कुल अन्धा हो गया। उस उपमन्यु पुरोहित ने अपने ज्ञानेन्द्रिय से देखा तो यही प्रतीत हुआ कि उसे अमावस्या को व्रत कर और श्री विश्वकर्मा जी का पूजन करना चाहिए। तब से ही उस पुरोहित ने सब कामों को छोडकर विधि पूर्वक व्रत किया। उस व्रत प्रभाव के कारण पुरोहित को दिव्य दृष्टि प्राप्त हुई और बुढापें मे भी उसको देखने की दृष्टि नष्ट नहीं हु ई। हे महाराज, मैं दीनता के साथ प्रार्थना करती हूँ कि आप भी दीन पालक श्री विश्वकर्मा की शऱण में जाइए जिससे इस दुःख से छुटकारा मिले।

राजा बोले - हे प्रिये, तुमने ठीक कहाँ है, इसको सुनकर मेरा चित्त बडां प्रफुल्लित हो रहा है और मुझे निश्चय सा हो रहा है कि भगवान श्री विश्वकर्मा के व्रत से रोग की अवश्य निवृत्ति होगी सूत जी कहने लगे कि उस दिन से लेकर वह राजा प्रतिदिन श्री विश्वकर्मा जी का पूजन और बदंन करके भोजन करने लगा। अमावस्या के दिन सब कामों को छोडकर विश्वकर्मा जी का पुजन और व्रत कराना चाहिए।

श्री विश्वकर्मा सहितान्तर्गत सृष्टिखण्ड विश्वकर्मा महात्मा का तीसरा अध्याय समाप्त।

❖ चौथा अध्याय

सूतजी कहने लगे - हे मुनियों, मैने तुमको श्री विश्वकर्मा जी के अद्भुत चरितामृत का पान कराया है। अब आगे जगत को विस्मय करने वाले चरित का वर्णन करता हूँ। जगत् में धर्म के व्यवहार से चलने वाले, सतोंषी कोई स्थकार और उसकी पत्नी वाराणसी पुरी में रहतें थे। अपने कर्म में कुशल, बुद्धिमान वह स्थकार बडां व्याकुल हुआ। अपने पर्याप्त निर्वाह के योग्य वृत्ति की खोज में दिन रात लगा रहता था। इस प्रकार सतत प्रयत्न करने के बाद भी कठिनाई से भोजन और आच्छादन ही प्राप्त कर सकता था।

उस स्थकार की स्त्री पुत्र न होने के कारण नित्य सोच करती रहती थी, कि मालूम नहीं बुढापे में कैसे निर्वाह होगा। इस प्रकार चिंतातुर वह स्त्री की इच्छा से मन्दिरों में महन्तों के पास व्याकुल होकर मन्त्र तन्त्रादि से पुत्र के अर्थ घूमने लगीं। परन्तु उसकी कामना कहीं भी सिद्ध नहीं हुई।

कोई ठग मयूर पंख्खो से झाडे कर बहकाता था और कौई जंतर देकर बहकाता था। कोई धूर्त श्वेत भस्म देकर घर भेज देता था। इस प्रकार दोंनो स्त्री पुरूष बडें दुःखी थे। उनको दुःखी देखकर एक पडोंसी ब्राह्मण बोला - हे स्थकार, तू क्यों इधर उधर भटकता फिरता है, मेरी बुद्धि में तू और तेरी भार्या बिल्कुल मूर्ख है। इसमें कोई सदेंह नहीं। इन मिथ्या उपायों से सतांन उत्पन्न नहीं हुआ करती है और न धन मिलता है, और न कुछ भी सुख प्राप्त होता है। यह तो व्यर्थ की भाग दौड है।

इसलिए तू सब वृथा के उपायों कों छोड दे और केवल दयालु श्री विश्वकर्मा की शरण को प्राप्त हो। हे श्रेष्ठ पुरूष, विश्वकर्मा की कृपा से तेरी अवश्य सिद्धी होगी। समस्त दुःखों कें नाश करने में श्री विश्वकर्मा के अतिरिक्त अन्य कोई भी समर्थ नहीं है।

कर्मों के अनुसार फल देने में विश्वकर्मा परमेश्वर स्वतन्त्र है और आगे पीछे करके कर्मो के फल देते रहते है। यदि तेरी यह दुर्दशा अपने बुरे कर्मो के फल से हो रही है तो, वह विश्वकर्मा रूप ईश्वर अन्य योनियों में भी फल दे सकता है, क्योकिं वह सर्व शक्तिमान है। इसलिए तू सब कामों को छोंडकर अमावस्या को व्रत कर और जितेन्द्रिय रह कर भक्ति से विश्वकर्मा भगवान का श्रवण किया कर। जितना हो सके उतना दान, अध्ययन परोपकार के कार्य आदि करता रह। इस प्रकार ब्राह्मण के वचनों को सुन कर उस स्थकार के लोचन खुल गए। उस परोपकारी ब्राह्मण के चरणों को स्पर्श करके वह स्थकर श्री विश्वकर्मा जी का ध्यान करता हुआ अपने घर को चला गया।

उस दिन से लेकर वह धर्मात्मा, स्थकार एवं उसकी पत्नी श्री विश्वकर्मा जी के चरण कमलों की शक्ति मे लीन रहने लगा। अमावस्या के दिन इस दिव्य व्रत के प्रभाव से वह दम्पत्ती धन और पुत्रों से युक्त हुई। उसका पुत्र बडां सुशील गुणवान विद्वान और अपने माता-पिता की सुश्रूषा करने वाला हुआ। इस प्रकार श्री विश्वकर्मा के प्रभाव से यह गृहस्थ सुख भोगने लगा। इसी प्रकार जो मनुष्य भक्ति-युक्त चित से श्री विश्वकर्मा का ध्यान करते हैं वे इस लोक में पुत्र-पौत्रादि से युक्त होकर सुखी होते है।

श्री विश्वकर्मा सहितान्तर्गत सृष्टिखण्ड विश्वकर्मा महात्मा का चौथा अध्याय समाप्त।

❖ पांचवां अध्याय

ऋषियों नें कहा - हे सूत जी, विश्वकर्मा भगवान का चरित्र सुनते हैं त्यों-त्यों उसके आगे की कथा सुनने की इच्छा और भी बढती जाती हैं। कृपया आगे की कथा कहें।

सूत जी बोले - एक बार नैमिषारण्य में मुनि और सन्यासी लोग एकत्र हुए और अपने अभीष्ट की प्राप्ति के लिए एक सभा की। विश्वामित्र कहने लगे कि हम लोगों के आश्रमों में राक्षस लोग यज्ञ करने वाले मुनियों के आस-पास ही बडे-बडें मनुष्य को अपना ग्रास बना लेते है। इसलिए अब हमें उनके कुकृत्यों से बचने का कोई उपाय अवश्य करना चाहिए।

सूत जी बोले - हे ऋषियों, इस प्रकार ऋषि-मुनियों के वचन सुनकर वषिष्ठ मुनि जी कहने लगे कि एक बार पहले भी ऋषि-मुनियों पर इस प्रकार का कष्ट आ पडा था। उस समय वह सब मिलकर स्वर्ग में ब्रह्मा जी के पास गये। ब्रह्मा जी ने ऋषि-मुनियों के कष्ट को सुनकर विश्वकर्मा भगवान की कथा का उपदेश दिया।

सूत जी बोले - हे ऋषियों, इस प्रकार उनके वचन सुनकर विश्वामित्र मुनि कहने लगे कि मुनि लोगो। वस्तुतः यह बात निश्चित ही है कि ब्रह्मा ही सब दुखों का उपाय है, इसलिए हमें इसके लिए कुछ अधिक सोच विचार की आवश्यकता नहीं।

सूत जी बोले - ऋषि लोंगों ने कहा कि विश्वामित्र मुनि के कथनानुसार ब्रह्मा की ही शरण जाना उपयुक्त है। ऐसा सुन सब ऋषि-मुनियों ने स्वर्ग को प्रस्थान किया वह राक्षसों से हुई अपनी दुर्दशा ब्रह्मा को सुनायें। मुनियों के कष्ट को सुनकर ब्रह्मा जी कहने लगे कि हे मुनियों सुनों उन राक्षसों को नष्ट करने में महा-तेजस्वी विश्वकर्मा ही है जो सब प्रकार के बलों से युक्त और सारे विश्व में प्रसिद्ध है। उसी की पूजा से तुम लोग राक्षसों को नष्ट करने मे समर्थ हो सकते हो। इस लिये विश्वकर्मा की शरण में जाओ। देवताओं को भोजन पहुचानें वाला अग्नि के पुत्र अंगिरा है और सब मुनियों में श्रेष्ठ है। वही आप कों दुखों से पार कर देगा। इसलिए हे मुनियों। आप उन्हीं मुनि श्रेष्ठ से मुक्ति पाने के लिए प्रार्थना करो।

सूत जी बोलें कि ब्रह्मा जी के कथनानुसार ऋषियों नें सब यज्ञ अनुष्ठान आदि किए और अंगिरा ऋषि के वचनों को सुनने के लिए उत्सुक हुए। अगिंरा ऋषि कहनें लगे कि हे मुनियों। आप के दुखों को काटने मे विश्वकर्मा के अतिरिक्त और कोई भी समर्थ नही, इसलिए तुम्हें चाहिए कि अमावस्या के दिन अपने साधारण कर्मों को रोक कर भक्ति पूर्वक विश्वकर्मा की कथा सुनों। जिसके सुनने मात्र से जन्म जन्मान्तर के पाप नष्ट हो जाते है। मुनि लोग ब्रह्मचर्य व्रत में स्थित हो विश्वकर्मा देव की पूजा द्वारा ध्यान करते हुए सब प्रकार के सुखों को प्राप्त करतें हैं। सूत जी कहने लगे कि मुनि लोग इस प्रकार महर्षि अगिंरा के वचनों को सुनकर अपने-अपने आश्रामों को चले गये और यज्ञ में विश्वकर्मा देव का पूजन किया, जिसका परिणाम यह हुआ कि उसकी पूजा से सारे राक्षस भस्म हो गए। यज्ञ विघ्नों से रहित हो गए तथा नाना प्रकार के सुखों से सम्पन्न हो गए। जो मनुष्य भक्ति पूर्वक विश्वकर्मा का चिन्तन करता है वह सुखों को प्राप्त करता हुआ संसार में बडें पद को प्राप्त करता है।

श्री विश्वकर्मा सहितान्तर्गत सृष्टिखण्ड विश्वकर्मा महात्मा का पांचवां अध्याय समाप्त।

❖ छटवां अध्याय

सूत जी बोले - हे मुनियों, मैं श्री विश्वकर्मा का माहात्म्य कहता हूँ तुम ध्यान से सुनों। उज्जैन नगरी में एक सर्वश्रेष्ठ धनंजय नामक सेठ था। उस सेठ का खजाना मोती हीरे जवाहरातों से भरा था। विवाह, व्यवहार, अभियोग रोग संकट में प्रत्येक मनुष्य उसके धन का उपयोग किया करता था। उपकार में लगें हुए इस सेठ का धन क्षीण हो गया और वह दुख पाने लगा। उस सेठ की यह प्रबल आशा थी, कि पूर्व उपकार किए मेरे मित्र मेरी अवश्वय सहायता करेगें। परतुं उसकी आशा व्यर्थ हुई और उसके मित्र क्षण मात्र में शत्रु हो गए और वे उपकृत मित्र ही सर्वप्रथम उस सेठ की निन्दा करने लगे। उसके वे पुराने मित्र अपनी दृष्टियों को छिपा छिपा कर निकल जाते थे।

इस नीच वृत्ति से उस धनंजय सेठ को संसार से विरक्ति और मनुष्यों से घृणा उत्पन्न हो गई। वह अपने नगर को छोडकर और कृतघ्नों के मुख पर थूक कर वन को चला गया। कन्द, मूल, फल आदि से प्रयत्न पूर्वक अपनी वृत्ति करता था और मनुष्य मात्र को देख कर दूर भाग जाता था। एक बार घूमते हुए सेठ ने पर्वत की गुफा में पद्मासन पर लोमश मुनि को देखा। उस धनंजय ने उस मुनि को कोशों से व्याप्त देख कर पसु समझा और कुतूहल (तमाशा) की इच्छा से उसके पास बैठ गया, मुनि ने पास बैठ हुए धनंजय से पूछा - हे महात्मन् कुशल तो हो, कहां से पधारे हो। उस धनंजय ने इस पशु को मनुष्य के समान बोलता देख कर बडा अचम्भा किया और प्रारम्भ से अपना सारा वृतान्त उस ब्रह्मर्षि को कहा।

यह सुनकर मुनिश्रेष्ठ धनंजय से बोला - यदि तुझे पापी कृतघ्नों से घृणा है, तो तू केसें विश्वकर्मा से विमुख हो रहा है। हे श्रेष्ठिन्, तुझको उसी विश्वकर्मा ने बनाया है। उस विश्वकर्मा को भूल जाने से कैसे सुख मिल सकता है। इसलिए तू अद्भुत शक्ति वाले विश्वकर्मा की शरण को प्राप्त हो। ऊर्ध्वमूल जगत् के कारण उस विश्वकर्मा के नाना रूप है। कोई रूप द्विबाहु कोई चतुर्बाहु और कोई दसबाहु का है इसी प्रकार मनु, मय, त्वष्टा, शिल्पी और दैवज्ञ से विश्वकर्मा के साकार रूप के पुत्र हैं। सेतुबंध के समय श्री रामच्रंद जी ने भी क्षी विश्वकर्मा का पूजन किया है। श्री कृष्णचन्द्र ने द्वारका रचना के समय श्री विश्वकर्मा की पूजा की है इसी से वे भी द्वारका जैसी सुदंर पुरी की रचना कर सकें है।

हे धनंजय, तू भी उसी श्री विश्वकर्मा का पूजन और वंदन कर, इस प्रकार सब दुखों से छुट कर सब सिद्धी प्राप्त करेगा। इस प्रकार उस लोमश ऋषि का उपदेश सुनकर उस श्रेष्ठी को बडां सतोंष हुआ और उस दिन से ही वह श्री विश्वकर्मा का भक्त हो गया, श्री विश्वकर्मा जी के पूजन से उसके समस्त पाप दुर हो गए और अन्त को देवता बन कर सुख स्वर्ग भोगनें लगा। जो मनुष्य भक्ति युक्त चित्त से श्री विश्वकर्मा का ध्यान करता है वह सुखी होकर विश्वकर्मा जी के चरण कमलों का भक्ति प्राप्त करता है। श्री विश्वकर्मा जी का यश बडा पवित्र है, उसकों जो तत्वज्ञ मनुष्य सुनता है वह पृथ्वी पर सब सुखों को प्राप्त करकें अन्ते में श्री विश्वकर्मां जी के शाश्वत पद को प्राप्त करता है।

श्री विश्वकर्मा सहितान्तर्गत सृष्टिखण्ड विश्वकर्मा महात्मा का छटावां अध्याय समाप्त।

❖ सातवां अध्याय

ऋषि कहने लगे, भगवान विश्वकर्मा की पवित्र कथा को श्रवणकर हमको बडी श्रद्धा उत्पन्न हुई है अब आगे और सुनना चाहते हैं। चित्त में उद्वेग होने पर क्या करना चाहिए, दरिद्रता किस प्रकार नष्ट होता है, मृतव सा अर्थात जिस स्त्री के उत्पन्न होकर बच्चा मर जाता है उसकी शान्ति का क्या उपाय है ? हे तपोधन, पहिले जन्म में किये गये पाप इस जन्म मे फल देते है। रोग, दुर्गति, अभीष्ट वस्तुओं का नाशक और समस्त पीडाओं के हरण करने वाले भगवान विश्वकर्मा के पूजन को कहता हूँ। दूध पीने वाले छोटे बालकों तथा तरूण बालकों का मरना मृतवत्सा स्त्रा का शाल्ति के लिए और चित का वैकल्प दूर करने के लिए भगवान विश्वकर्मा का पूजन करना चाहिए।

प्राचीन काल में रथन्तर कल्प में एक दन्तवाहन नाम का राजा हुआ। वह सूर्य के सामन प्रभावशाली लोकों में प्रसिद्ध था। उसी का कृतवीर्य नाम का एक प्रतापी पुत्र हुआ जो सातों द्वीपों पर्यन्त पृथ्वी की शासन करता था। उस राजा के 11 पुत्र पूर्व जन्म में किये पाप के वश पैदा होते ही नष्ट हो गये, तब तो रानी शोक करती हुई पृथ्वी पर पछाडे खाती हुई रूदन करने लगी और राजा से बोली कि मैं अपने यौवन को नष्ट करके पुत्रहीन कैसे धैर्य धारण करूं। तब राजा अपनी स्त्री को सन्तोंष दिला कर गुरू के घर गया और प्रणाम कर बोला - हे भगवन मेंरे पुत्र होकर मर जाते है यह किस देन की मुझसे अवहेलना होती है सो कहिए, क्योकि दिन-रात उत्पन्न हुए पुत्रों को याद करके रानी बहुत रूदन करती हैं और धैर्य धारण नही करती हैं।

गुरू बोले हे – राजन, अब बहुत शोक मत करो, तुम्हारे एक वशं को बढाने वाला चिरंजीवी पुत्र होगा। देवों के देवेश भगवान् विश्वकर्मा का पूजन करों, उनके प्रसन्न होने पर अवश्य पुत्र सिद्धि होगी, उनकी पूजा के आगे अन्य देवों की पूजा से क्या? तब राजा ने धर्म से दृढ होकर अपनी पत्नी सहित भगवान् विश्वकर्मा का पूजन किया। वस्त्र आभूषणों से ब्रह्मणों को सनतुष्ट किया। तब भगवान् विश्वकर्मा के प्रसन्न होने पर उसकी स्त्री ने गर्भ धारण किया और दसवें महीनें में सुन्दर से पुत्र को जन्म दिया। तभी से वह विश्वकर्मा का महीने-महीने मे पूजन करने लगा अन्त मे वैकुण्ठ को गया। मृतवत्सा को शक्ति के लिए चित का भ्रम होने पर विश्वकर्मा प्रभु का अर्चन करना चाहि ए। ऐसा करने से मनुष्य की इच्छायें पूर्ण होती है दरिद्रता का नाश बाल पीडा और दुःस्वप्न का भय नहीं होता।

श्री विश्वकर्मा सहितान्तर्गत सृष्टिखण्ड विश्वकर्मा महात्मा का सातवां अध्याय समाप्त।